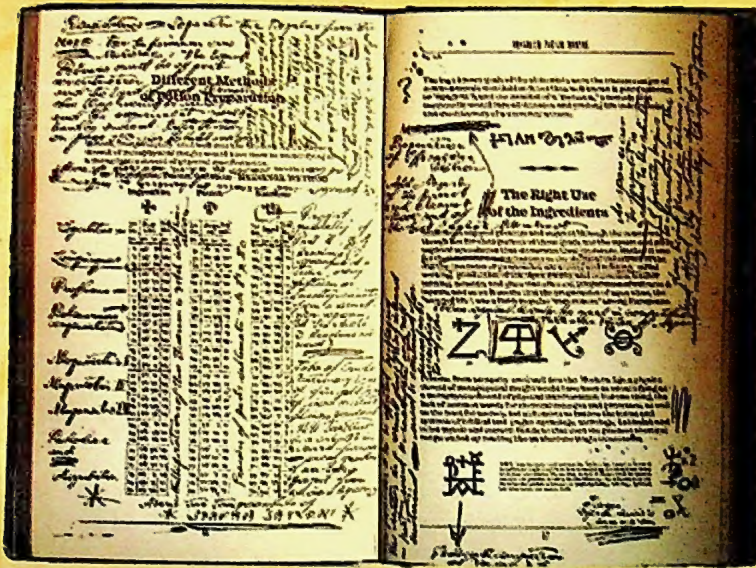


# प्राचीन हस्तलिखित पेथियों का विवरण

पाचवां खण्ड



सम्पादक

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा



बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-4





# प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

[ पाचवाँ खण्ड ]

सम्पादक

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

शोध-सहायक

श्रीरामनारायण शास्त्री

श्रीविधाता मिश्र

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक  
बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्  
पटना-६

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण ; विक्रमाब्द २०१८ ; शकाब्द ; १८८३ सृष्टाब्द १९६१

द्वितीय संस्करण-११०० प्रतियाँ

शकाब्द - अग्रहायण १९३६

विक्रमाब्द - २०७१

सृष्टाब्द - २०१५

मूल्य - ४५/- रुपये

मुद्रकः  
हिमाचल प्रेस  
दरियापुर, पटना-४

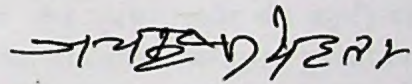


## वक्तव्य

मुझे अतिशय प्रसन्ता है कि 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण नामक पुस्तक के पांचवें खण्ड के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन परिषद् द्वारा हो रहा है। परिषद् की स्थापना से ही हस्तलिखित पोथियों के अन्वेषण संकलन, ग्रंथ विवरण प्रकाशन तथा अनुसंधान का कार्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ शोध विभाग में होता रहा है।

इस खण्ड में २११ महत्वपूर्ण संस्कृत हस्तलिखित पोथियों के विवरण प्रकाशित है। इसमें देवनागरी के अतिरिक्त मिथिलाक्षर, बंगाक्षर लिखित ग्रन्थों के विवरण भी है। यही नहीं तालपत्रों पर भी लिखित ग्रन्थों के विवरण भी है। सम्पादकीय के बाद बारह शीर्षकों में विभक्त ये विवरण अनुसंधान के लिए बड़े ही उपयोगी हैं। परिशिष्ट में अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ भी दी गयी हैं, ख, ग, घ, शीर्षक के अन्तर्गत मिथिलाक्षर, बंगाक्षर, ताल पत्र पर उपलब्ध ग्रन्थों की अनुक्रमणिका उपलब्ध है। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा द्वारा सम्पादित ये विवरण साहित्य का गौरव है।

पुनर्मुद्रण इस रूप में शीघ्र आ जाने का श्रेय हमारे प्रूफ रीडर तथा प्रकाशन विभाग को है। मैं उन्हें बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि विद्वानों का पूर्ववत सहयोग मिलता रहेगा।



१४ जनवरी २०१५

निदेशक

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

रिसर्च-सोसायटी की ओर से भी संस्कृत हस्तलिखित पोथियों के विवरण चार खण्डों में मुद्रित हुए हैं, किन्तु वे ग्रन्थ उक्त अनुसंधान-संस्थान में संकलित नहीं हैं। इस विवरण में विशिष्ट ग्रन्थकारों के सम्बन्ध में सूचनात्मक टिप्पणी भी दे दी गई है। अन्त के परिशिष्ट (१-अज्ञात ग्रन्थकारों के ग्रन्थों की अनुक्रमणिका, २-ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका, ३-ग्रन्थों की अनुक्रमणिका, ४-महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य खोज-विवरणों में उनके उल्लेख का विवरण) अवश्य सुधो अनुसंधायकों को शोध में सहायक होंगे।

अन्त में इस महत्त्वपूर्ण विवरण-ग्रन्थ के सम्पादक स्व० आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा के तत्त्वावधान में अनुशीलन-कार्य में संलग्न अनुसंधायकद्वय—श्रीरामनारायण शास्त्री और श्रीविधाता मिश्र—को हम धन्यवाद देते हैं, जिनकी योग्यता, लगन और शोध-कुशलता का यह प्रस्न है। जिन ग्रन्थाधिपों के ग्रन्थों के विवरण इसमें प्रकाशित हैं, हम उनके प्रति भी साभार कृतज्ञता प्रकट करते हैं। आशा है, इस विवरण से अनुसंधित्सुओं को विशेष लाभ होगा। पहले के चार खण्डों का हिन्दी-संसार में अच्छा स्वागत हुआ है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

दुर्गापूजा

शकाब्द १८८३



भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'

संचालक



## संकेत-विवरण

- वि० सं० — विक्रम-संवत्  
 क्र० सं० — क्रम-संख्या  
 वि० — विषय  
 ग्र० सं० — ग्रन्थ-संख्या  
 प० सं० — पत्र-संख्या  
 फ० — फसली सन्  
 आ० — आकार  
 ई० — ईसवी-सन्  
 ल० सं० — लक्ष्मण-संवत्  
 खो० वि० — खोज-विवरणिका  
 दे० ना० — देवनागरी  
 र० का० — रचना-काल  
 लि० का० — लिपि-काल और लिपिकार  
 पृ० सं० — पृष्ठ-संख्या  
 प्र० पृ० पं० — प्रति-पृष्ठ-पंक्तियाँ  
 खो० वि० ग्रं० — खोज-विवरण-ग्रन्थ  
 वि० रा० भा० प०, पट — बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना  
 आ० शा० भं० ज० ग्रं० सू० — आमेर शास्त्र-भंडार-जयपुर (जैन) ग्रंथ-सूची  
 क० प्रा० ता० ग्रं० — कन्नड प्रान्तीय तालपत्रीय ग्रन्थ-सूची  
 जै० सि० भ०, आ० सु० — जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा, सूची  
 सी० सी० पार्ट — कैटलोगस कैटलोगेरम (ऑफ़ोर्ट) स्क्रिप्ट्स भाग  
 सी० एस० सी० — कलकत्ता-संस्कृत-कॉलेज  
 एच् पी० एस० खं० — हरप्रसादशास्त्री खण्ड  
 बी० एम्० — ब्रिटिश म्यूजियम  
 सी० पी० बी० पी० — सेंट्रल प्रोविन्स एन्ड बरार प्रोविन्स  
 डिस० क्लैट० एम्० — डिस्ट्रिक्ट केटलॉग ऑफ् संस्कृत मैनेस्क्रिप्ट्स गवर्मेन्ट  
 ओरियंटल मैनेस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी मद्रास  
 हि० सा० सं०, प्र० — हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग  
 का० ना० प्र० सं०, खो० वि० — काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा, खोज-विवरण  
 प्रा० सं० ह० लि० पो०, खो० वि० खं० ५—प्राचीन संस्कृत हस्तलिखित पोथियों का  
 खोज-विवरण, खण्ड-५

वि० रि० सो०, पट० — बिहार-रिसर्च-सोसायटी, पटना

डिस० कैट० ऑफ् स० मै० इन् दि अ० ला० — डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ् संस्कृत  
मैनस्क्रिप्ट्स इन् दि अड्यार लाइब्रेरी

डिस कैट० ऑफ् मि० मै० — डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑफ् मिथिला मैनस्क्रिप्ट्स

जै० शा० भ० ग्र० सू० — जैन-शास्त्रभंडार ग्रन्थ-सूची

न्यू० कैट० कैट०, यू० म० — न्यू कैटलोगस कैटलोगेरम, यूनिवर्सिटी, मद्रास

हि० सा० और वि० — 'हिन्दी-साहित्य और बिहार'

रा० जै० शा० भ०, ग्र० सू०, २ भाग — राजस्थान जैन० शास्त्र-भंडार, ग्रन्थ-  
सूची, दूसरा भाग

सी० ए० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स, इन दि एशियाटिक सोसायटी ऑफ्  
बंगाल

सी० आई० ओ० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स इन् दि इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी

एच्० पी० एस्० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स एडिटेड बाइ हरप्रसाद शास्त्री

आर० एल्० एम्० — कैटलॉग ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स एडिटेड बाइ राजेन्द्रलाल मित्र

बी० एम्० — कैटलाग आफ् ब्रिटिश भूजयम

ए० सी० — (ए० कॉवटन) पेरिस

डी० सी० पी० — गवर्नमेण्ट कॉलेक्शन्स ऑफ् मैनस्क्रिप्ट्स, डेकन कॉलेज पूना

ट्री० कैट० — ट्रिनीयल कैटलॉग ऑफ् मै० गवर्नमेण्ट ओरियण्टल मै०  
लाइब्रेरी, मद्रास ।

बी० एस० सी० — बनारस संस्कृत कॉलेज (मै० कैटलॉग)

जे० बी० — जैसलमेर-भंडार

भ० ओ० आर० आई० — भंडारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना (१९२५)

रा० ला० मि० — राजेन्द्रलाल मित्र



## विषयानुक्रम

सम्पादकीय निवेदन	१—३
प्राचीन संस्कृत हस्तलिखित पोथियों का विवरण	५
काव्य, नाटक, स्तोत्र, कथा आदि	५—११
दर्शन (वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, तर्कशास्त्र आदि)	११—१६
स्मृति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, दाक्षा आदि	१६—१६
ज्योतिष	१६—२१
आगम-शास्त्र (तन्त्र, मन्त्र आदि)	२१—२२
पुराण एवं इतिहास	२२—२४
व्याकरण	२४—२७
छन्दःशास्त्र	२७—२८
आयुर्वेद	२८
प्रातिशाख्य एवं उपनिषद्	२८—२६
धनुर्वेद	२६
प्रथम परिशिष्ट — अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ	१—४
द्वितीय परिशिष्ट क — ग्रन्थों की अनुक्रमणिका	५—११
ख — मिथिलाक्षर में लिखित ग्रन्थों की अनुक्रमणिका	
ग — वंगाक्षर में	” ” ”
घ — ताल-पत्र पर	” ” ”
च — ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका	”
तृतीय परिशिष्ट — महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज—विवरणों में उनके उल्लेख का विवरण	१८—४७

विवरणों में सम्भवतः नहीं हैं। निम्नलिखित प्रमुख ग्रन्थकारों की रचनाएँ बिहार-रिसर्च-सोसाइटी को खोज में मिल चुकी हैं—

जगन्नाथ<sup>१</sup>, माघ<sup>२</sup>, कालिदास (मिश्र)<sup>३</sup>, धर्मदास<sup>४</sup>, भानुदत्तमिश्र<sup>५</sup>, अमर<sup>६</sup>, मुरारि<sup>७</sup>, कवि कालिदास<sup>८</sup>, भवभूति<sup>९</sup>, जयदेव<sup>१०</sup>, भारवि<sup>११</sup>, वेणीदत्त<sup>१२</sup>, रुद्रधर<sup>१३</sup>, उमापति<sup>१४</sup>, पराशर<sup>१५</sup>, हलायुध<sup>१६</sup>, रघुनन्दन भट्टाचार्य<sup>१७</sup>, वाचस्पति<sup>१८</sup>,

- १—दे० बिहार और उड़ीसा रिसर्च-सोसाइटी से प्रकाशित (१९३३)—‘डिस्ट्रिक्टिव कैटलॉग ऑफ मैनेस्क्रिप्ट्स इन मिथिला’ (खं० २, खड्गविलास प्रेस, दौकीपुर में मुद्रित) पृष्ठ० १०६, १०७, ग्रं० सं० १०३—४ प्रतियाँ।
- २—दे० वही—पृष्ठ० १६४—१६६, ग्रं० सं० १५६, ए-डी—७ प्रतियाँ।
- ३—दे० वही—पृ० ६७, ग्रं० सं० ६३, ए—बी—३ प्रतियाँ।
- ४—दे० पृष्ठ० १४३, १४५, ग्रं० सं० १४०, १४५—४ प्रतियाँ।
- ५—दे० वही—पृ० ५१, ग्रं० सं० ४७।
- ६—दे० वही—पृष्ठ० ८, ९, ग्रं० सं० ९, ए, बी, सी—४ प्रतियाँ।
- ७—दे० वही—पृ० १, ग्रं० १, ए—२ प्रतियाँ।
- ८—दे० वही—पृष्ठ० २०, २१, २७, ११८, ग्रं० सं० २०, ए; २६, ए, बी; ११४, ए, बी—८ प्रतियाँ।
- ९—दे० वही पृ० १११, ग्रं० सं० १०७।
- १०—दे० वही—पृष्ठ० ३६—४४, ग्रं० सं० २७, ए; ३६, ए—एल्—१६ प्रतियाँ।
- ११—दे० वही—पृष्ठ० २३, २५, ग्रं० सं० २३, ए—एफ—८ प्रतियाँ।
- १२—दे० वही—पृ०—४४, ग्रं० सं० ३४ ए—जी—७ प्रतियाँ।
- १३—दे० वही—खण्ड १, पृष्ठ० ४३७—४४८, ग्रं० सं० ३८२ ए—एच्—१—३५ प्रतियाँ।
- १४—दे० वही—खण्ड १, पृष्ठ० ४२४—४२६, ग्रं० सं० ३७३ ए—एच्—६ प्रतियाँ और ग्रं० सं० ३७४, ए—सी—४ प्रतियाँ।
- १५—दे० वही—खण्ड १, पृष्ठ० २७०-२७१, ग्रं० सं० २४६ तथा २४६ ए—बी—३ प्रतियाँ और ग्रं० सं० २५०, केवल १ प्रति।
- १६—दे० वही—खण्ड १, पृ० ३२७, ग्रं० सं० २८३ तथा २८६ ए—२ प्रतियाँ और पृ० ३२८, ग्रं० सं० २८७—३ प्रति।
- १७—दे० वही, खण्ड १, पृष्ठ० ५१३ एवं ५१४, ग्रं० सं० ४३८ एवं ४३८ ए—२ प्रतियाँ।
- १८ (क)—(द्वैतनिर्याय) वही, खण्ड १, पृष्ठ० २३६—२४२, ग्रं० सं०—२२७ ए—जे—११ प्रतियाँ।
- १८ (ख) - (श्रान्दचिन्तामणि)-वही, खण्ड १, पृष्ठ० ४६०-४६३, ग्रं० सं० ३९३, ३९३ए - आइ - १० प्रतियाँ



महामहोपाध्याय महेश ठाकुर<sup>१</sup>, श्रीपति भट्ट<sup>२</sup>, विश्वनाथ<sup>३</sup> और शिवदास<sup>४</sup> ।

इस विवरण-पुस्तिका में ग्रन्थों की संख्या विषयानुक्रम से निम्नलिखित हैं—  
 (१) काव्य, नाटक-स्तोत्र, कथा आदि—४०, (२) दर्शन (वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, तर्क-शास्त्र आदि)—४६, (३) स्मृति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, दीक्षा आदि—३१, (४) ज्यौतिष—१८, (५) आगमशास्त्र (तंत्र, मंत्र आदि)—१६, (६)—पुराण एवं इतिहास—१७, (७) व्याकरण—२८, (८) छन्दःशास्त्र—६, (९) आयुर्वेद और (१०) उपवेद ।

इन ग्रन्थों को जिन महानुभावों ने परिपद्-संग्रहालय के लिए भेंट के रूप में, मूल्य लेकर अथवा निर्मूल्य दिया है, वे धन्यवादार्ह हैं ।

जीर्ण-शीर्ण पोथियों को व्यवस्थित करने तथा उन्हें पढ़कर उनके विवरण प्रस्तुत करने में परिपद् के प्राचीन हस्तलिखित पोथी-शोध-विभाग के सुयोग्य शोध-सहायक श्रीविधाता मिश्र ने बड़ी निष्ठा से कार्य किया है । श्रीरामनारायण शास्त्री ने विवरण की प्रेस-कापी तैयार करने में जो श्रम किया है, उसका उल्लेख भी आवश्यक है ।

महाशिवरात्रि  
 २०१६ वि०

नलिनविलोचन शर्मा

अध्यक्ष

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग

१—दे० वही—पृष्ठ० १५३—१५७; ग्रं० सं० १४६, १४६ ए—एम्—१४ प्रतियाँ ।

२—दे० वही—खण्ड—३, पृष्ठ० १४३—१४४, ग्रं० सं० १२३, १२३.ए—ई—६ प्रतियाँ ।

३—इस नाम के दो ग्रन्थकार हो गये हैं । दोनों की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं । दे० वही—खण्ड ३, पृष्ठ० ३२-३३, ४५-४६, ग्रं० सं० ३३ ए, ४३-४४ और पृष्ठ० ६६ ६८, ११०-११२, १५७-१५८, २६४, ४६०, ४८५-४८७, ५०६-५१०, ग्रं० सं० ५७ ए—डी, ६५ ए—बी, १३५ ए—सी, २५२, ३८५, ४०६ ए—बी, ४२३ ए—बी—२४ प्रतियाँ ।

४—दे० वही - खण्ड २, पृ० १५९, ग्रं० सं० १५५ ।





## प्राचीन संस्कृत हस्तलिखित पोथियों का विवरण

### काव्य, नाटक, स्तोत्र, कथा आदि

- ५२—कुंवरसिंह चरित । प्र०—शिवकुमारमिश्र<sup>१</sup> । र०—वि० सं० १६६६ । लि०—शिवकुमारमिश्र । लि० का०—वि० सं० १६६६ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११० । दशा—पूर्ण । अमुद्रित । आ०—७"×११" ।
- ५३—कविकर्पटी । प्र०—शंखोदर भट्ट<sup>२</sup> । र०—× । लि०—ईश्वरदत्त पाठक । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—६.१०"×४.६" ।
- ५४—बिहारी सतसई—संस्कृत टीका । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२२ । दशा—खण्डित । आ०—१.८"×५" ।
- ५५—भामिनी विलास । प्र०—जगन्नाथ<sup>३</sup> । र०—प्रसिद्ध । लि०—राममनोरथ । लि० का०—वि० सं० १८७१ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२५ । दशा—खण्डित । मुद्रित । आ०—६.१२"×४.४" ।
- ५६—घनेकार्थध्वनिमंजरी । प्र०—× । र०—× । लि०—मत्तगजराज । लि० का०—× । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ । दशा—खण्डित । मुद्रित । आ०—८.१२"×३.१२" ।

१—भभुआ, शाहाबाद-निवासी; १६७० वि० के लगभग वर्तमान; 'पद्यमय वीर अर्जुन' के रचयिता; भागवत महापुराण के हिन्दी-रूपान्तरकार; अनेक अप्रकाशित ग्रन्थों के प्रणेता । हिन्दी और संस्कृत में लिखी इनकी रचनाएँ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित हैं ।

२—मिथिला संस्कृत-विद्यापीठ (दरभंगा) के प्राध्यापक श्रीअनन्तलाल ठाकुर के मतानुसार ये सम्भवतः भागलपुर-निवासी थे तथा इन्हीं का नाम शंखोदर भी था । इनका जीवन-काल अज्ञात है ।

३—'पण्डितराज' उपाधि से प्रसिद्ध ये काशी-निवासी तैलङ्ग ब्राह्मण थे एवं यवन-सम्राट् शाहजहाँ और उसके पुत्र दाराशिकोह के प्रिय कवि थे । इनका जीवन-काल १७वीं शताब्दी (ख्रिष्टीय) के प्रथम चरण से तृतीय चरण तक माना जाता है । इनकी निम्न-लिखित रचनाएँ प्रसिद्ध हैं—(क) रसगङ्गाधर, (ख) भामिनीविलास, (ग) मनोरमा-कुचमर्दिनी टीका, (घ) कल्याणलहरी, (ङ) गङ्गालहरी, (च) अमृतलहरी, (छ) लक्ष्मी-लहरी एवं (ज) सुधालहरी ।

- ५७—शिशुपालवध—जाड्यापहारिणी टीका<sup>१</sup> । प्र०—महाधन । र०—X । लि०—  
माधव । लि० का०—X । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१८० । दशा—  
खण्डित । अमुद्रित । आ०—११.१२"X५.८" ।
- ५८—शिशुपालवध । प्र०—माधव । र०—प्रसिद्ध । लि०—रामचन्द्र । लि० का०—  
वि० सं० १८६० । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१७१ । दशा—  
पूर्ण । मुद्रित । आ०—१२.८"X३.२" ।
- ५९—नलोदय काव्य ( सुबोधिनी टीका-सहित ) । मू० प्र०—कालिदास<sup>२</sup> । टीका०—X ।  
र०—X । लि०—जगदीश । लि० का०—वि० सं० १६६१ । वि०—काव्य । लिपि—  
दे० ना० । प० सं०—५० । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—६.५"X३.४" ।
- ६०—विदग्धमुखमण्डन । प्र०—धर्मदास । र०—X । लि०—गोपालमिश्र । लि० का०—  
वि० सं० १८८६ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—७४ । दशा—  
खण्डित । मुद्रित । आ०—११.८"X४.८" ।
- ६१—विदग्धमुखमण्डन । प्र०—धर्मदास<sup>३</sup> । र०—X । लि०—X । लि० का०—वि० सं०  
१७७४ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२५ । दशा—पूर्ण । मुद्रित ।  
आ०—१०.१२"X३" ।
- ६२—प्रस्तावनाकर । प्र०—हरिदास<sup>३</sup> । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२२ । दशा—खण्डित । आ०—  
६.१२"X४.४" ।
- ६३—हरिहरपरायण । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—वि० सं० १८८८ ।  
वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—७४ । दशा—खण्डित । आ०—  
१०.८"X५.२" ।
- ६४—अध्यात्मरामायण । प्र०—वेदव्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—२६५ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—  
१४.२"X४.६" ।
- ६५—कविकल्पलता । प्र०—देवेश्वर । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—२६ । दशा—पूर्णा । मुद्रित । आ०—  
११.१४"X४" ।

१—यह टीका अभी तक प्रायः अमुद्रित है । विवरण-ग्रन्थों में टीकाकार का नाम  
अनागत है ।

२—विश्व-प्रसिद्ध महाकवि कालिदास से भिन्न १७वीं शती (ख्रिष्टीय) के मिथिला-निवासी  
का. दास से अभिन्न प्रतीत होते हैं ।

३—‘पुस्तक-रत्नाकर’ के ग्रन्थकार हरिदास नवोपलब्ध है । अन्य खोज-विवरणिकाओं  
में इनके नाम की चर्चा नहीं हो पाई है ।



६६—वीरविरुदाधली । ग्र०—रघुदेवमिश्र । र०—X । लि०—श्रीभवनाथ शर्मा ।  
लि० का०—शाके १८२१ । वि०—कान्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—२६ ।  
दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—१२"X४" ।

६७—रसपारिजात' (तात्पत्र) । ग्र०—भानुदत्तमिश्र<sup>२</sup> । र०—१४वीं शती । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—कान्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—६० । दशा—खण्डित ।  
मुद्रित । आ०—१५.४"X२" ।

६८—रसतरङ्गिणी । ग्र०—भानुदत्तमिश्र । र०—१४वीं शती । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—कान्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४५ । दशा—  
खण्डित । मुद्रित । आ०—११"X४.८" ।

१—यह ग्रन्थ खण्डित रूप में कविशेखर बदरीनाथ झा ( साहित्य-प्राध्यापक, धर्मसमाज  
संस्कृत-कॉलेज, मुजफ्फरपुर ) के सम्पादकत्व में प्रायः १९४० ई० में मोतीलाल  
बनारसीदास द्वारा प्रकाशित हो चुका है । यह रस-सद्धान्त का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है ।

२—ये दरभंगा जिला के सरिसव-पाही ग्राम के निवासी संस्कृत के विद्वान् थे । इन्होंने  
'अनौचित्यादौ नान्यद्वसभङ्गस्य कारणम्' यह पद्य आनन्दवर्धन ( ८५० ई०—८८५ ई० ) के  
ध्वन्यालोक ( पृ० १४५ ) से अथवा महिमभट्ट ( ११वीं शती खृष्टीय द्वितीय चरण ) के  
व्यक्तिविवेक ( पृ० ३१ ) से लिया है और धनञ्जय ( लगभग १००० ई० ) के दशरूपक का  
नामोल्लेख किया है । इन्होंने अपनी कृति गीतगौरीश की रचना जयदेव ( १२वीं  
शताब्दी )-रचित गीतगोविन्द के आदर्श पर की है । इनकी रसमञ्जरी पर गोपदेव ने  
'विकास' नामक टीका १४३७ ई० में लिखी है और शाङ्गधर-पद्धति ( लगभग १३६३ ई० )  
में भी भानु पण्डित के नाम से कुछ पद्य उद्धृत किये गये हैं । अतएव भानुदत्त का  
समय सम्भवतः ईसा की १३वीं और १४वीं शती का मध्यकाल है । किन्तु अन्य  
इतिहासकारों के मत से ये सोलहवीं शती में वर्तमान थे । डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल ने  
बिहार-रिसर्च-सोसाइटी के विवरण में चौदहवीं शती में इनकी स्थिति का उल्लेख  
किया है । दे० 'डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग ऑव मैनेस्क्रिप्ट्स इन मिथिला' खं० २  
( काव्य-खण्ड ), पृ० ५ । इनकी 'गीतगौरीपति' नामक रचना बिहार-रिसर्च-सोसाइटी  
को भी खोज में मिली है । दे० ग्रं० सं० ४७, पृ० ५१ । इस रचना का उल्लेख  
'कैटलॉग्स कैटलोगेरम' में तथा कलकत्ता संस्कृत-कॉलेज की सूची में भी हुआ है ।  
इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं—( क ) रसमञ्जरी, ( ख ) रसतरङ्गिणी, ( ग ) रसपारिजात,  
( घ ) अलंकार तिलक, ( ड. ) गीतगौरीश, ( च ) तिथिविचार एवं कुछ स्फुट पद्या ।

- ६६—अमरुशतक (सटीक) । ग्र०—अमरु कवि<sup>१</sup> । र०—X । टीका०—ज्ञानानन्द कलाधर । लि०—X । लि० का०—X । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२६ । दशा—पूर्ण । मुद्रित ।
- ७०—अलंकारमंजरी । ग्र०—वेणीदत्त । र०—X । लि०—सखलालमिश्र । लि० का०—वि० सं० १८२५ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२४ । दशा—खण्डित ।
- ७१—मुरारि नाटक (अनर्घराघव) । ग्र०—मुरारि<sup>२</sup> । र०—नवीं शताब्दी । लि०—X । लि० का०—X । वि०—काव्य (नाटक) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५१ । दशा—खण्डित । मुद्रित । आ०—१०.१४"X४.२" ।
- ७२—मुद्राराक्षस । ग्र०—विद्यालक्ष्मण<sup>३</sup> । र०—प्रसिद्ध । लि०—बुलाराम । लि० का०—

१—इतिहास में कहीं-कहीं इनका नाम अमरु भी मिलता है । इनका समय ख्रिष्टीय ६वीं शती का उत्तरार्द्ध अथवा उससे पूर्व माना जाता है; क्योंकि ध्वन्याचार्य आनन्दवर्धन ८५० ई०—८८५ ई० ने अपने ध्वन्यालोक में इनके मुक्तकों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है—

‘मुक्तकेषु हि प्रबन्धेष्विव रसबन्धाभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते । तथा ह्यमरुकस्य कवेः मुक्ताः शृङ्गारस्पन्दिनः प्रबन्धायमाणाः प्रसिद्धा एव ।’

२—ये मौद्गल्यगोत्री श्रीवर्धमानक तथा तनुमति देवी के पुत्र थे । ये मैथिल ब्राह्मण थे एवं इनकी कौलिक उपाधि ‘मिश्र’ थी । ‘बाल वाल्मीकि’ नाम से भी इनकी ख्याति है । महाकवि रत्नाकर (८२५ ई०) के ‘हरविजय’ नामक महाकाव्य की निम्नलिखित पंक्तियाँ मुरारि को भवभूति (७३६ ई०) से पश्चाद्वर्त्ती सिद्ध करती हैं । अतः, इनका समय अष्टम शतक का उत्तरार्द्ध माना जाता है ।

३—मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में इन्होंने स्वयं अपना कौलिक परिचय दिया है, किन्तु इनका जीवन-काल अभी तक सन्दिग्ध ही है । निम्नलिखित श्लोक के आधार पर इनके जीवन-काल के सम्बन्ध में अनेक तर्क हैं—

वाराहीमात्मयोनेस्तनुभवनविधावास्थितस्यानुरूपां

यस्य प्राग्दन्तकोटिप्रलयपरिगता शिश्रिये भूतधात्री ।

श्लेच्छैरुद्वेज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्तेः

स श्रीमदबन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं पार्थिवोऽवन्तिवर्मा ॥१॥

(क) दक्षिण-भारत के पल्लव-नरेश दन्तिवर्मा का समय ७२० ई० के लगभग माना जाता है, किन्तु उस समय के किसी भी आक्रमणकारी श्लेच्छ का पता नहीं चलता ।

(ख) डॉक्टर जायसवाल ने चन्द्रगुप्त द्वितीय ( ३७५—४१३ ई० ) विक्रमादित्य को ही उपर्युक्त भरत-वाक्य का विषय माना है । अतः उनके मत से इनका समय ४०० ई० के लगभग है, किन्तु यह मत तथ्यपूर्ण प्रतीत नहीं होता है; क्योंकि श्लेच्छों (हूणों)



वि० सं० १६३५ । वि०—काव्य (नाटक) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८३ ।  
 दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—६.४"×३.१२" ।

७३—सप्तशतीव्याख्या । प्र०—नागोजिभट्ट<sup>१</sup> । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
 वि०—काव्य (स्तोत्र) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१७ । दशा—पूर्ण । मुद्रित ।  
 आ०—६.४"×४" ।

७४—सौन्दर्यलहरी । प्र०—शङ्कराचार्य<sup>२</sup> । र०—६वीं शती । लि०—X । लि० का०—

का शासन-काल चन्द्रगुप्त-शासन के करीब ५० वर्ष बाद आरम्भ होता है ।  
 (ग) टीकाकार दुष्टिदराज के मतानुसार भरत-वाक्य में चन्द्रगुप्त मौर्य का वर्णन है,  
 जिसके अनुसार इनका समय चतुर्थ शती ई० पू० है । किन्तु यह प्रसङ्ग-विरुद्ध है ।  
 (घ) वस्तुतः मौलखिवंश के कन्नौज-नरेश अवन्तिवर्मा ( लगभग. ५८२ ई० ) के समय  
 में म्लेच्छों (हूणों) का उपद्रव पश्चिमोत्तर भारत (पंजाब) में विशेष रूप से हुआ था ।  
 उन हूणों को अवन्तिवर्मा ने थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्द्धन की सहायता से परास्त  
 किया था । अतः, मुद्राराक्षसनाटककार विशाखदत्त का जीवन-काल छठी शती (ख्रिष्टीय)  
 का उत्तरार्द्ध मानना चाहिए ।

१—ये संस्कृत-व्याकरण, अलङ्कार-शास्त्र तथा योगदर्शन के निष्णात विद्वान् थे । इनका  
 जीवन-परिचय अभी तक पूर्ण रूप से प्रकाश में नहीं आया है । इनका नाम नागेश भी था ।  
 ये काशी-निवासी, महाराष्ट्र ब्राह्मण एवं शृङ्गवेरपुर (इलाहाबाद के समीप) के रामसिंह  
 राजा के आश्रित, सिद्धान्तकौमुदी के रचयिता भट्टोजिदीक्षित के प्रपौत्र हरिदत्त के  
 शिष्य थे । अतः, नागोजिभट्ट का समय सम्भवतः १७वीं शती का अन्तिम चरण अथवा  
 १८वीं शती का प्रथम चरण है । भानुदत्त की रसमञ्जरी पर जो नागोजिभट्ट-कृत  
 टीका है, उसकी हस्तलिखित प्रति, जिसमें सन् १७१२ ई० की तिथि स्पष्ट रूप से  
 लिखित है, इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी (लन्दन) में सुरक्षित है । इनकी रचनाएँ  
 इस प्रकार हैं—(क) महाभाष्य टीका (सद्योत-विवृति), (ख) परिभाषेन्दुशेखर,  
 (ग) लघुशब्देन्दु-शेखर, (घ) लघुमञ्जूषा, (ङ) परमलघुमञ्जूषा, (च) रसगङ्गाधर-टीका,  
 (छ) योगसूत्र-विवृति, (ज) काव्यप्रकाश-टीका एवं (झ) रसमञ्जरी-टीका आदि ।

२—इनका जन्मस्थान दक्षिण-भारत के केरल-प्रान्त में कोचीन शोरानूर रेलवे लाइन पर  
 स्थित 'आलवाई' स्टेशन से करीब पाँच मील की दूरी पर अवस्थित काटली ग्राम है ।  
 ये नम्बूदरी ब्राह्मण थे एवं शिवगुरु तथा सती के सुपुत्र थे । इनका जीवन-काल ६वीं  
 शती है । मूल ग्रन्थ, भाष्य-ग्रन्थ, प्रस्थानत्रयी, गीता-भाष्य, उपनिषद्-भाष्य, इतर  
 ग्रन्थों पर भाष्य, स्तोत्र ग्रन्थ, प्रकरण-ग्रन्थ, तन्त्र-ग्रन्थ आदि विविध ज्ञानशाखाओं के  
 शताधिक ग्रन्थ इन्होंने लिखे । काव्य, स्तोत्र एवं तन्त्र तीनों की दृष्टि से इनकी  
 सौन्दर्यलहरी महत्त्वपूर्ण है । इस पर ३५ विद्वानों ने टीकाएँ लिखी हैं, जिनमें लक्ष्मीधर,  
 कैवल्याश्रम, भास्कर राय, कामेश्वर सूरि तथा अच्युतानन्द प्रमुख हैं ।

- वि० सं० १८५७ । लिपि—दे० ना० । वि०—काव्य (स्तोत्र) । प० सं०—७ ।  
 दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—६.५"×४" ।
- ७५—वेतालपंचविंशतिका । प्र०—शिवदास<sup>१</sup> । र०—× । लि०—× । लि० का०—  
 वि० सं० १६७४ । वि०—काव्य (कथा) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६३ ।  
 दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—१०.४"×४.४" ।
- ७६—रघुवंश । प्र०—कालिदास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—  
 काव्य । लिपि—बँगला । प० सं०—१२२ । दशा—खण्डित । आ०—  
 १६"×२.१२" ।
- ७७—मालतीमाधव (तालपत्र) । प्र०—भवभूति । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि०  
 का०—× । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—११२ । दशा—खण्डित ।  
 आ०—१४"×१.१२" ।
- ७८—दुर्गासप्तशती (तालपत्र) । प्र०—व्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि०  
 का०—× । वि०—स्तोत्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१४ । दशा—खण्डित ।  
 आ०—८.४"×२.१०" ।
- ७९—अध्यात्मरामायण । प्र०—वेदव्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× ।  
 वि०—काव्य । लिपि—बँगला । प० सं०—११६ । दशा—खण्डित । आ०—  
 १७.८"×५" ।
- ८०—गीतगोविन्द । प्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । लि०—प्रेमदास । लि० का०—  
 सं० १६७१ । वि०—काव्य । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१५ । दशा—पूर्ण ।  
 आ०—१२"×६" ।
- ८१—किरातार्जुनीय । प्र०—भारवि । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× ।  
 वि०—काव्य । लिपि—देवनागरी । प० सं०—२३ । दशा—खण्डित । आ०—  
 ११.६"×४" ।
- ८२—गीतगोविन्द । प्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× । वि०—  
 काव्य । लिपि—देवनागरी । प० सं०—४६ । दशा—पूर्ण । आ०—८"×३.८" ।
- ८३—रसकौस्तुभ । प्र०—वेणीदत्त<sup>२</sup> । र०—× । लि०—जगन्नाथ । लि० का०—  
 १२८० फ० । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—२५ । दशा—खण्डित ।  
 आ०—११"×४" ।
- ८४—शिशुपालवधटीका ( तालपत्र ) । प्र०—माघ । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि०

१—अज्ञात और नवोपलब्ध ग्रन्थकार । यह रचना बिहार-रिसर्च सोसाइटी को भी खोज में मिली है ।

२—१८८७ वि० में वर्तमान, अलङ्कारमञ्जरी के मिथिला-निवासी रचयिता । यह ग्रन्थ बिहार-रिसर्च-सोसाइटी को भी खोज में मिला है ।



का०—X । वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—५७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१४"X२" ।

८५—दशकुमारचरित । प्र०—दण्डी । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—काव्य । लिपि—मैथिली । प० सं०—८४ । दशा—खण्डित । आ०—  
६.८"X४.८" ।

८६—रामगीत । प्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८ । दशा—पूर्ण । आ०—६"X४" ।

८७—स्फुट श्लोकसंग्रह । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—प्रकीर्ण काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५५ । दशा—पूर्ण । आ०—  
६.८"X३.१२" ।

८८—ऋतुसंहार । प्र०—कालिदास । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—सं० १६१६ ।  
वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२० । दशा—पूर्ण । आ०—  
११.१२"X४.४" ।

८९—कुमारसम्भव । प्र०—कालिदास । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—सं०  
१७१६ । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—८.४"X४" ।

९०—महावीरचरित । प्र०—भवभूति । र०—प्रसिद्ध । लि०—गोविन्दसिंह शर्मा ।  
लि० का०—सं० १६७० । वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५७ ।  
दशा—केवल पञ्चम अङ्क, 'आरण्यक' पूर्ण । आ०—६.१२"X५.८" ।

९१—गीतगोविन्द ( रसमञ्जरी टीका-सहित ) । प्र०—जयदेव । र०—प्रसिद्ध । टीका—  
म० म० शङ्करमिश्र । र०—X । लि०—कृष्णनाथ पंडा । लि० का०—सं० १८५० ।  
वि०—काव्य । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८६ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"X५" ।

### दर्शन ( वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, तर्कशास्त्र आदि )

९२—वेदान्तसार-सुबोधिनी टीका । प्र०—नरसिंह सरस्वती । र०—X । लि०—  
रामानुजप्रह शर्मा । लि० का०—X । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५२ ।  
दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—११"X ५.८" ।

९३—वाक्यसुधा ( कला टीका-सहित ) मूल प्र०—शङ्कराचार्य । र०—६वीं शताब्दी ।  
टीका—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प०  
सं०—२४ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०"X४.१२" ।

९४—आत्मबोध । प्र०—शङ्कराचार्य । र०—६वीं शताब्दी । लि०—रामहित । लि०  
का०—वि० सं० १६५८ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२ । दशा—  
पूर्ण । आ०—१०, ८"X४, ८" ।

- १५—वेदान्तसंज्ञाप्रक्रिया । प्र०—शङ्कराचार्य । २०—१६वीं शताब्दी । लि०—रामहित ।  
लि० का०—x । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१७ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१०.१०"x४.१०" ।
- १६—विधिरसायन । प्र०—अप्पयदीक्षित । २०—१८वीं शती । लि०—x । लि०  
का०—x । वि०—दर्शन (मीमांसा) । लिपि दे० ना० । प० सं०—१८५ । दशा—  
खण्डित, मुद्रित । आ०—६"x४" ।
- १७—शास्त्रदीपिका । प्र०—म० म० पार्थसारथि मिश्र । २०—x । लि०—x ।  
लि० का०—x । वि०—दर्शन (मीमांसा) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४६७ ।  
दशा—खण्डित, मुद्रित । आ०—१०.८"x४" ।
- १८—मीमांसारत्न । प्र०—रघुनाथ भट्टाचार्य । २०—x । लि०—x । लि० का०—  
वि० सं० १६६८ । वि०—दर्शन (मीमांसा) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४६ ।  
दशा—खण्डित । आ०—११.८"x४.४" ।
- १९—सांख्यसूत्रवृत्ति—प्र०—x । २०—x । लि०—हरिकृष्ण । लि० का०—वि० सं०  
१८९१ । वि०—दर्शन (सांख्य) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१४ । दशा—  
पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०.१२"x४.६" ।
- १००—सांख्यतत्त्वकौमुदी । प्र०—वाचस्पति मिश्र । २०—१६वीं शती । लि०—हरिकृष्ण ।  
लि० का०—वि० सं० १८७५ । वि०—दर्शन (सांख्य) । लिपि—दे० ना० ।  
प० सं०—५२ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—११"x४.१२" ।
- १०१—गौडपादभाष्य । प्र०—गौडपाद । २०—x । लि०—x । लि० का०—वि० सं०  
१८५२ । वि०—दर्शन (सांख्य) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५४ । दशा—  
पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०.१०"x५" ।

१—ये सम्भवतः मैथिल ये एवं इनका स्थिति-काल लगभग १२वीं शती माना जाता है । इन्होंने टुप्टीका की व्याख्या 'तर्करत्न' तथा श्लोक-वार्त्तिक की मान्य टीका 'न्यायरत्नाकर' लिखी है । इनका मौलिक प्रकरण ग्रन्थ शास्त्रदीपिका भाट्टमत का नितान्त प्रामाणिक, उपादेय तथा प्रमेयबहुल माना जाता है ।

२—वाचस्पतिमिश्र नामक दो दार्शनिक मिथिला में ही चुके हैं । एक लगभग १६वीं शताब्दी में और दूसरे प्रायः १५वीं शताब्दी में । उक्त ग्रन्थकार प्राचीन वाचस्पति हैं । इनका निवास-स्थान मिथिला के बड़गाम (बड़ागाँव, मधुबनी सब डि०, दरभंगा) नामक ग्राम में था । ये द्वादशदर्शनटीकाकार कहलाते थे । नास्तिक-दर्शन की टीकाएँ अभी तक उपलब्ध नहीं हुई हैं, आस्तिक-दर्शन की कृतियाँ, जो प्रकाश में आ चुकी हैं, निम्नलिखित हैं—(क) न्यायकणिका, (ख) तत्त्वसमीक्षा, (ग) तत्त्वविन्दु, (घ) न्यायवार्त्तिक तात्पर्यटीका, (ङ) सांख्यतत्त्वकौमुदी, (च) योगभाष्यविवृति, (छ) ब्रह्मसूत्र-शांकर भाष्य-टीका (भामती) इत्यादि ।



- १०२—ब्रह्मनिरूपण । ग्रं०—कबीरदास<sup>२</sup> (?) । र०—प्रसिद्ध । लि०—हुलासी पाण्डेय ।  
लि० का०—वि० सं० १६५७ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—६.१०"×४.४" ।
- १०३—दशमात्रा । ग्रं०—कबीरदास (?) । र०—प्रसिद्ध । लि०—हुलासी पाण्डेय ।  
लि० का०—वि० सं० १६५७ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२० ।  
दशा—पूर्ण । आ०—६.१२"×४.५" ।
- १०४—अद्वैतलक्षणचन्द्रिका । ग्रं०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
दर्शन (वेदान्त) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४६८ । दशा—खण्डित । आ०—  
१५"×७.१२" ।
- १०५—पदार्थतत्त्व । ग्रं०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—दर्शन ।  
लिपि—दे० ना० । प० सं०—२६ । दशा—खण्डित, मुद्रित । आ०—१२"×५" ।
- १०६—वेदान्तपरिभाषा । ग्रं०—धर्मराजदीक्षित । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—दर्शन (वेदान्त) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२६ । दशा—पूर्ण,  
मुद्रित । आ०—६.६"×४.१०" ।
- १०७—तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाश । ग्रं०—X । र०—X । लि०—परमानन्द । लि०  
का०—ल० सं० ४७७ । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१२३ ।  
दशा—खण्डित, मुद्रित, तालपत्र । आ०—१४"×१.१२" ।
- १०८—न्यायसिद्धान्तमञ्जरी । ग्रं०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—बैंगला । प० सं०—२३ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—  
१३"×३.२" ।
- १०९—न्यायादर्श । ग्रं०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र ।  
लिपि—बैंगला । प० सं०—१६ । दशा—पूर्ण, अमुद्रित । आ०—१३"×३.२" ।
- ११०—अवच्छेदकावच्छेदेनानुमितिविचारः । ग्रं०—X । र०—X । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—८ । दशा—  
खण्डित । आ०—१८"×३.८" ।
- १११—अनुमितिर्मानसत्वनिराकरणम् । ग्रं०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१८"×३.८" ।
- ११२—व्युत्पत्तिवादः—ग्रं०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—३७ । दशा—खण्डित । आ०—  
११.८"×३.८" ।

२—ग्रन्थ-रचयिता के रूप में अनेक जगह कबीरदास के नाम आये हैं । एक जगह  
पृ० ५८ में 'इतिभीसद्गुरुविरचितम्' ऐसा भी निर्देश है । इस ग्रन्थ में ३७६  
पद्य हैं । यह एक नवोपलब्ध ग्रन्थ है ।

- ११३—विषयतावाद । ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य । र०—१७वीं शती । लि०—तारामाध ।  
लि० का०—शाके १७६८ । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—११.८"×३.८" ।
- ११४—शक्तिवाद । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र ।  
लिपि—मैथिली । प० सं०—२० । दशा—खण्डित । आ०—११.१२"×३.१२" ।
- ११५—अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारणभावः । ग्र०—X । र०—X । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१७ । दशा—  
पूर्ण । आ०—१८.४"×३.८" ।
- ११६—प्रामाण्यवाद । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१३ । दशा—पूर्ण । आ०—१८"×३.८" ।
- ११७—सन्निकर्षनिरूपण । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—  
१७.१४"×३.८" ।
- ११८—आचार्यानुमानरहस्य । ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य । र०—१७वीं शती ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—६ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१८.८"×३.६" ।
- ११९—श्रीमद्भगवद्गीता । ग्र०—व्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—प्रेमदास । लि० का०—  
सं० १६२१ । वि०—दर्शन । लिपि—देवनागरी । प० सं०—२४ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१२"×५.८" ।
- १२०—हठप्रदीपिका । ग्र०—स्वात्माराम । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—दर्शन (हठयोग) । लिपि—देवनागरी । प० सं०—२० । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१२"×५.४" ।
- १२१—स्वरोदयशास्त्र । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
दर्शन । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×५.४" ।
- १२२—शारीरकमीमांसा-भाष्य । ग्र०—शङ्कराचार्य । र०—६वीं शती । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—दर्शन । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१०८ । दशा—  
खण्डित । आ०—११.८"×५.८" ।
- १२३—पक्षता गादाधरी । ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य । र०—X । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१२ । दशा—  
खण्डित । आ०—१८"×३.८" ।
- १२४—वेदान्तसार । ग्र०—सदानन्द । र०—X । लि०—X । लि० का०—शाके १७२३ ।  
वि०—दर्शन । लिपि—मैथिली । प० सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—  
१०.१२"×४.१०" ।
- १२५—योगवासिष्ठसार । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
योग । लिपि—मैथिली । प० सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ० ११.८"×४" ।



- १२६—श्रीमद्भगवद्गीता (तालपत्र) । ग्र०—व्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—दर्शन । लिपि—मैथिली । प० सं—६८ । दशा—खण्डित ।  
आ०—११"X२" ।
- १२७—परामर्श गादाधरी । ग्र०—गदाधर भट्टाचार्य । र०—१७वीं शती । लि०—X ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—२२ । दशा—  
पूर्ण । आ०—१८"X३.८" ।
- १२८—योगसूत्र । ग्र०—पतञ्जलि । र०—प्रसिद्ध । लि०—शुभनाथ । लि० का०—X ।  
वि०—दर्शन (योग) । लिपि—मैथिली । प० सं०—५ । दशा—पूर्ण, एक अंश ।  
आ०—६.८"X४.४" ।
- १२९—तर्कभाषा । ग्र०—केशवमिश्र । र०—X । लि०—देवकण्ठ । लि० का०—  
सं० १७१५ । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३६ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—६X"३.१२" ।
- १३०—योगवासिष्ठसार । ग्र०—X । र०—X । लि०—हरिकृष्ण । लि० का०—  
सं० १८६३ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१०"X४.८" ।
- १३१—सव्यभिचार-टीका (क्रोडपत्र) । ग्र०—जगदीश । र०—X । लि०—लोकनाथ ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३० । दशा—  
खण्डित । आ०—२०"X४" ।
- १३२—हेत्वाभाससामान्यनिरूपण (क्रोडपत्र) । ग्र०—जगदीश । र०—X । लि०—  
लोकनाथ । लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४१ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—२०"X४" ।
- १३३—पक्षताविचार (क्रोडपत्र) । ग्र०—जगदीश । र०—X । लि०—लोकनाथ ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८० । दशा—पूर्ण ।  
आ०—२०"X४" ।
- १३४—अवच्छेदकताविचार (क्रोडपत्र) । ग्र०—जगदीश । र०—X । लि०—  
लोकनाथ । लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—२०"X४" ।
- १३५—व्यधिकरण-विचार (क्रोडपत्र) । ग्र०—जगदीश । र०—X । लि०—लोकनाथ ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४३ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—२०"X४" ।
- १३६—व्याप्तिपञ्चक-टीका (क्रोडपत्र) । ग्र०—जगदीश । र०—X । लि०—लोकनाथ ।  
लि० का०—X । वि०—तर्कशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ ।  
दशा—खण्डित । आ०—२०"X४" ।
- १३७—श्री मदभगवद्गीता (सूबोधिनी टीका-सहित) । टीका० श्रीधरस्वामी ।

र०—X । लि०—X । लि० का०—सं० १८४८ । वि०—दर्शन । लिपि—दे० ना० ।  
प० सं०—६८ । दशा—पूर्ण । आ०—१०" X ५" ।

### स्मृति, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, दीक्षा आदि

- १३८—स्मात्तोल्लास । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—स्मृति ।  
लिपि—दे० ना० । प० सं०—५५ । दशा—खण्डित । आ०—११.८" X ५" ।
- १३९—स्मृतितत्त्व । ग्र०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । र०—X । लि०—रघुनन्दन भट्टाचार्य ।  
लि० का०—X । वि०—स्मृति । लिपि—मैथिली । प० सं०—६८ ।  
दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१२.४" X ४.८" ।
- १४०—पाराशरी स्मृति । ग्र०—पराशर । र०—प्रसिद्ध । लि०—रामरक्षा । लि० का०—  
वि० सं० १६०४ । वि०—स्मृति । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ । दशा—  
खण्डित, मुद्रित । आ०—१०.१२" X ४.१०" ।
- १४१—कालनिर्णयदीपिका । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१०.८" X ३.१२" ।
- १४२—धर्मप्रवृत्ति । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—धर्मशास्त्र ।  
लिपि—दे० ना० । प० सं०—७२ । दशा—खण्डित । आ०—१३" X ५.२" ।
- १४३—पुष्टिप्रवाहमर्यादाविवरण । ग्र०—पीताम्बर । र०—X । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ । दशा—  
पूर्ण । आ०—१०.८" X ४.१०" ।
- १४४—गृह्यसूत्र । ग्र०—पारस्कर । र०—प्रसिद्ध । लि०—मुकुन्दराम । लि० का०—  
वि० सं० १६०३ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८१ । दशा—  
पूर्ण मुद्रित । आ०—१०.८" X ४.८" ।
- १४५—प्रायश्चित्तप्रदीपिका । ग्र०—भास्कराचार्य । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—७४ । दशा—  
खण्डित । आ०—१०.१८" X ४.६" ।
- १४६—द्वैतनिर्णय । ग्र०—वाचस्पतिमिश्र<sup>१</sup> । र०—१५वीं शती । लि०—देवनाग ।  
लि० का०—फसली सन् १२८४ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—  
४८ । दशा—पूर्ण । मुद्रित । आ०—१२.४" X ४.१०" ।

१—इनका स्थितिकाल लगभग १५वीं शताब्दी तथा निवास-स्थान सम्भवतः वरभंगा-  
जिला था । ये व्याकरण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आदि के प्रकाण्ड विद्वान् थे  
और महाराज भैरवसिंह के दरबार में राजपण्डित थे । इनकी कृति पितृभक्तितरङ्गिणी  
के निम्नलिखित उद्धरण के अनुसार इनके ४१ ग्रन्थ थे, जिनमें निम्नलिखित



१४०—अद्वैतनिर्णयप्रदीप । प्र०—गोकुलनाथः । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—९ । दशा—पूर्ण । आ०—११.४" X ४.८" ।

१४८—ब्राह्मणसर्वस्व । प्र०—हलायुध । र०—X । लि०—देवदत्त झा । लि० का०—वि० सं० १७३६ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१५४ । दशा—पूर्ण + मुद्रित । आ०—११.४" X ५.१०" ।

१४९—लिङ्गार्चनचन्द्रिका । प्र०—सदाशिव । र०—X । लि०—X । लि० का०—वि० सं० १८०५ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२८६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२" X ५" ।

१५०—मन्त्रमहोदधि । प्र०—महीधर । र०—X । लि०—रत्ननाथ । लि० का०—X । वि० सं० १८८५ । वि०—कर्मकाण्ड । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१४४ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०.२" X ५.२" ।

१५१—मन्त्रप्रदीप । प्र०—हरपति । र०—१४वीं शती । लि०—X । लि० का०—X ।

प्रकाश में आ चुके हैं—(क) आचारचिन्तामणि, (ख) विवादचिन्तामणि, (ग) व्यवहारचिन्तामणि, (घ) शुद्धिचिन्तामणि, (ङ) तीर्थचिन्तामणि, (च) भास्त्रचिन्तामणि, (छ) षोडश महादाननिर्णय, (ज) कृत्यप्रदीप, (झ) कृत्यमहाशंख, (ञ) द्वैतनिर्णय, (ट) पितृभक्तितरङ्गिणी इत्यादि ।

शास्त्रे दश स्मृतौ त्रिंशन्निबन्धा येन यौवने ।

निर्मितास्तेन चरमे वयस्यैष विनिर्गमे ॥

—पितृभक्तितरङ्गिणी ।

• ये वंशगोत्रीय मैथिल ब्राह्मण थे तथा महाराज राघवसिंह के समय (शकाब्द १७वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध) में दरभंगा जिला के मँगरीनी ग्राम में निवास करते थे । विशानिधि पीताम्बर सपाध्याय तथा उमादेवी के ये पुत्र थे तथा सकल शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे । कुछ दिनों तक ये गढ़वालश्रीनगराधीश फतेशाह के आश्रित थे और उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने एकावली नामक प्रामाणिक छन्दोग्रन्थ की रचना की । (क) अभूतोदय (नाटक), (ख) एकावली (छन्दोग्रन्थ), (ग) कादम्बरी (कीर्तिश्लोक), (घ) कादम्बरीप्रदीप (द्वैतनिर्णय-टीका), (ङ) कादम्बरी प्रश्नोत्तरमाला (च) काव्यप्रकाश-टीका, (छ) कुण्डकादम्बरी, (ज) कुसुमाञ्जलि-लटिप्यणी । (झ) पदवाक्यरत्नाकर, (ञ) मुक्तिवाद-विचार आदि इनके २३ ग्रन्थ उपलब्ध हैं ।

- वि०—दीक्षा । लिपि—मैथिली । प० सं०—६१ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१२"×४.१०" ।
- १५२—तडागोत्सर्गपद्धति । प्र०—रघुशर्मा । र०—× । लि०—× । लि० का०—× ।  
वि०—कर्मकाण्ड । लिपि—मैथिली । प० सं०—२७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१३"×३.४" ।
- १५३—शुद्धिविवेक । प्र०—रुद्रधर । र०—१६वीं शती । लि०—× । लि०  
का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—५६ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१२.८"×४" ।
- १५४—गौरीशङ्कर-प्रतिष्ठाविधि । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× ।  
वि०—कर्मकाण्ड । लिपि—मैथिली । प० सं०—३१ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१३"×३.८" ।
- १५५—धर्मशास्त्रनिबन्ध (तालपत्र) । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि०  
का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—५० । दशा—  
खण्डित । आ०—१३.८"×१.१२" ।
- १५६—याज्ञवल्क्यस्मृति-धर्मशास्त्रीय विधृति टीका । प्र०—विज्ञानेश्वर । र०—× ।  
लि०—× । लि० का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—बँगला । प० सं०—४८ ।  
दशा—पूर्ण, आ०—१२.८"×५" ।
- १५७—शिवलिङ्गप्राणप्रतिष्ठाविधि । प्र०—कल्याण । र०—× । लि०—× । लि०  
का०—× । वि०—कर्मकाण्ड । लिपि—मैथिली । प० सं०—५१ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१२"×४.१२" ।
- १५८—प्राद्वचिन्तामणि । प्र०—वाचस्पति । र०—१५वीं शती । लि०—देवनाथ ।  
लि० का०—× । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—७० ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१२.८"×४.१२" ।
- १५९—शुद्धिविवेक । प्र०—रुद्रधर । र०—१६वीं शती । लि०—रामाधीन । लि० का०—  
सं० १८८७ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—देवनागरी । प० सं०—६८ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—८.१२"×३.१२" ।
- १६०—सरोजसुन्दर । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—सं० १८५० ।  
वि०—कर्मकाण्ड । लिपि—देवनागरी । प० सं०—२५ । दशा—पूर्ण । आ०—  
११.८"×५.४" ।
- १६१—आह्निकम् । प्र०—रूपनाथ । र०—× । लि०—× । लि० का०—शाके  
१७६० । वि०—कर्मकाण्ड । लिपि—मैथिली । प० सं०—१२ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१०.४"×४.८" ।
- १६२—शुद्धिविवेक । प्र०—रुद्रधर । र०—१६वीं शती । लि०—× । लि०



का०—X । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—२३ । दशा—  
खण्डित । आ०—११"X४.८" ।

१६३—शुद्धिनिर्णय । प०—उमापति । र०—१८वीं शती । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१६ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१२"X४.८" ।

१६४—मलमासतत्त्व । प०—रघुनाथ भट्टाचार्य । र०—X । लि०—X । लि० का०—X  
वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—बैंगला । प० सं०—१०४ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१६"X३.४" ।

१६५—एकादशीतत्त्व । प०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । र०—X । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—बैंगला । प० सं०—११० । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१६.८"X३" ।

१६६—शुद्धितत्त्व । प०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । र०—X । लि०—काशीनाथ शर्मा ।  
लि० का०—शकाब्द १७३४ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—बैंगला । प० सं०—  
१२६ । दशा—खण्डित । आ०—१८.४"X३.४" ।

१६७—शुभकर्मनिर्णय । प०—मुरारिमिश्र । र०—८वीं शती । लि०—शुभनाथ ।  
लि० का०—शकाब्द १८०३ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—१६ ।  
दशा—खण्डित । आ०—१२.४"X४.१२" ।

१६८—तिथिनरवचिन्तामणि । प०—म० म० महेश ठाकुर । र०—प्रसिद्ध । लि०—X ।  
लि० का०—यवनाब्द १२८६ । वि०—धर्मशास्त्र । लिपि—मैथिली ।  
प० सं०—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२.४"X४.१२" ।

### ज्यौतिष

१६९—प्रह्लाधवसिद्धान्तरहस्योदाहरण । प०—विश्वनाथ । र०—X । लि०—X ।  
लि० का०—वि० सं० १८५० । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प०  
सं०—७४ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१२.१०"X३.४" ।

१७०—कृपासिन्धु । प०—कृपाराम । र०—X । लि०—X । लि० का०—वि०  
सं० १८६० । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—२४ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—११.६"X४" ।

१७१—शम्भुहोराप्रकाश । प०—पुञ्जराज । र०—X । लि०—उज्जगर शर्मा । लि०  
का०—वि० सं० १६१२ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—  
१०० । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०.१२"X४.१०" ।

१७२—नवरत्न । प०—परमसुखोपाध्याय । र०—X । लि०—उज्जगर शर्मा । लि० का०—  
वि० सं० १६१४ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—४४ । दशा—  
पूर्ण, मुद्रित । आ०—१०.१२"X४.१०" ।

- १०३—मुहूर्त्तमार्त्तयङ् । प्र०—X । र०—X । लि०—उजागर शर्मा । लि० का०—  
वि० सं० १६१० । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१८ । दशा—  
पूर्ण, मुद्रित । आ०—१२.१२"X४.१२" ।
- १०४—मुहूर्त्तगणपति । प्र०—गणपति । र०—१५वीं शती । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—६७ । दशा—खण्डित, मुद्रित ।  
आ०—१२"X५.४" ।
- १०५—ज्यौतिपरत्नमाला । प्र०—श्रीपतिभट्ट । र०—X । लि०—उजागरवृत्त । लि०  
का०—वि० सं० १६०४ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—५८ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१२.४"X४.४" ।
- १०६—ज्यौतिपरत्नमाला । प्र०—श्रीपतिभट्ट । र०—X । लि०—छत्तीचन्द्र ।  
लि० का०—वि० सं० १८८४ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—  
४३ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"X५.१०" ।
- १०७—रत्नद्योत । प्र०—गङ्गाशरण । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—  
ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—४० । दशा—रुद्धित । आ०—  
१०.८"X४.८" ।
- १०८—मुहूर्त्तभूषण । प्र०—ग्रजभूषणमिश्र । र०—वि० सं० १५११ । लि०—छद्मवृत्त ।  
लि० का०—वि० सं० १८७१ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—देवनागरी । प० सं०—  
३५ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"X६" ।
- १०९—बृहज्जातक । प्र०—महीधर । र०—X । लि०—X । लि० का०—सं०  
१६१० । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—७४ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१३"X५" ।
- ११०—जातकपद्धति । प्र०—श्रीपतिभट्ट । र०—X । लि०—उजागर शर्मा । लि०  
का०—सं० १६१२ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६० ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१३"X४.१२" ।
- १११—भास्वतीविवरण-टीका । प्र०—श्रीमाधवमिश्र । र०—X । लि०—उजागर  
शर्मा । लि० का०—सं० १६१२ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—  
३४ । दशा—पूर्ण । आ०—१०.१०"X४.१०" ।
- ११२—मुहूर्त्तचिन्तामणि । प्र०—वैद्यशरण । र०—प्रसिद्ध । लि०—शिवस्तोत्र । लि०  
का०—सं० १८७६ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१०"X४" ।
- ११३—भुवनदीपक । प्र०—पद्मसुर । र०—X । लि०—X । लि० का०—सं०  
१६१३ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१०.४"X४.८" ।



१८४—सूर्यसिद्धान्त । प्र०—X । र०—X । लि०—उमापति । लि० का०—सं० १८५५ । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३४ । दशा—मानाध्याय पर्यन्त, पूर्ण । आ०—११.४"X४" ।

१८५—मकरन्दविवरण । प्र०—दिवाकर । र०—X । लि०—उजागर धर्मा । लि० का०—सं० १६१० । वि०—ज्यौतिष । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२.४"X४.१२" ।

१८६—यात्रातत्त्व । प्र०—रघुनन्दन भट्टाचार्य । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—ज्यौतिष । लिपि—बंगला । प० सं०—१६ । दशा—खण्डित । आ०—१५.१२"X३" ।

### आगम-शास्त्र (तन्त्र, मन्त्र आदि)

१८७—प्रत्यक्तत्त्वप्रदीपिका । प्र०—चित्तख । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम ( तन्त्र ) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१४ । दशा—खण्डित । आ०—१०.१०"X५.८" ।

१८८—वीरभद्र महातन्त्र । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम ( तन्त्र ) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—८.८"X५.६" ।

१८९—यन्त्रतन्त्रकोष्ठकचिन्तामणि । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम ( तन्त्र, यन्त्र आदि ) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ । दशा—खण्डित । १०.१०"X४.६" ।

१९०—वीरतन्त्र ( भैरवीतन्त्र ) । प्र०—X । र०—X । लि०—नीलकण्ठ । लि० का०—वि० सं० १७२६ । वि०—आगम ( तन्त्र ) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—७७ । दशा—पूर्ण । आ०—११.८"X५.८" ।

१९१—ताराभक्तिसुधार्याव । प्र०—म० म० नरसिंह ठाकुर । र०—वि० सं० १८५३ । लि० का०—वि० सं० १८५३ । वि०—आगम ( तन्त्र ) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—८१ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"X४.६" ।

१९२—सिद्धखण्ड ( यक्षिणीसाधन ) । प्र०—नित्यनाथ सिद्ध । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम ( तन्त्र ) । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३० । दशा—खण्डित । आ०—८.१२"X४" ।

१९३—नृसिंहतन्त्र । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम ( तन्त्र ) । लिपि—मैथिली । प० सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—७.१२"X३.१४" ।

- १६४—भैरवतन्त्र ( मन्त्ररङ्गैतसंग्रह ) । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम (तन्त्र) । लिपि—मैथिली । प० सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—६२"x४" ।
- १६५—कालीकल्पलता । प्र०—विमर्शानन्दनाथ । र०—X । लि०—हीरामणि । लि० का०—वि० सं० १७६६ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१४६ । दशा—खण्डित । आ०—५.११"x३.१३" ।
- १६६—शारदातिलक । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११२ । दशा—खण्डित । आ०—१३"x५" ।
- १६७—ताराभक्तिसुधारणव । प्र०—नरसिंह ठाकुर । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम । लिपि—मैथिली । प० सं०—३४ । दशा—पूर्ण । आ०—११"x४.८" ।
- १६८—वड्डीशतन्त्र । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम । लिपि—मैथिली । प० सं०—२७ । दशा—खण्डित । आ०—११.४"x५" ।
- १६९—मन्त्रमहोदधि । प्र०—महोदधर । र०—X । लि०—उजागर शर्मा । लि० का०—सं० १६१२ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११७ । दशा—पूर्ण । आ०—१४.४"x५.८" ।
- २००—शारदातिलक । प्र०—X । र०—X । लि०—उजागर शर्मा । लि० का०—१६१३ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१३१ । दशा—पूर्ण । आ०—१४.४"x५.८" ।
- २०१—वर्णभैरवतन्त्र । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—आगम । लिपि—बँगला । प० सं०—१७ । दशा—पूर्ण । आ०—१७.१२"x३.४" ।
- २०२—आगमशास्त्रविवरण । प्र०—शङ्कर । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—सं० १८५२ । वि०—आगम । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५४ । दशा—पूर्ण । आ०—१०.१०"x४.१४" ।

### पुराण एवं इतिहास

- २०३—ब्रह्मवैवर्तपुराण ( कृष्णार्जुनखण्ड ) । प्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—३११ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१५"x४.८" ।

- २०४—नरसिंहपुराण । प्र०—x । र०—x । लि०—x । लि० का०—x ।  
वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—६६ । दशा—पूर्ण, मुद्रित ।  
आ०—१३.८"x५" ।
- २०५—त्रिविधाद्भुतसागरसार । प्र०—x । र०—x । लि०—x । लि० का०—x ।  
वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—२१ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१२"x४.१२" ।
- २०६—राधाभक्तिमञ्जूषा । प्र०—x । र०—x । लि०—x । लि० का०—x ।  
वि०—पुराण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१३३ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१२.१३"x६.६" ।
- २०७—भगवद्भक्तिरत्नावली । प्र०—x । र०—x । लि०—श्यामदास । लि० का०—  
वि० सं० १८५० । वि०—पुराण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५३ । दशा—  
पूर्ण, मुद्रित । आ०—७.८"x३.१३" ।
- २०८—इतिहाससमुच्चय । प्र०—x । र०—x । लि०—चतुर्भुज शर्मा । लि० का०—  
वि० सं० १९३८ । वि०—इतिहास । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१५६ ।  
दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१३"x५" ।
- २०९—प्रश्नपरामर्श । प्र०—चन्द्रशेखर । र०—वि० सं० १९८८ । लि०—चन्द्रशेखर ।  
लि० का०—वि० सं० १९८८ । वि०—पुराण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—३७ ।  
दशा—पूर्ण, अमुद्रित । आ०—१२.१२"x८.२" ।
- २१०—वामनपुराण । प्र०—ज्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—x । लि० का०—x ।  
वि०—पुराण । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१४७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१२.८"x५.८" ।
- २११—त्रिविधाद्भुतसागरसार । प्र०—चतुर्भुज । र०—x । लि०—भाईजी शर्मा ।  
लि० का०—शाके १७८६ । वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१२"x४.१२" ।
- २१२—कर्मविपाकसंहिता (तालपत्र) । प्र०—x । र०—x । लि०—रघुनन्दन ।  
लि० का०—शाके १६७४ । वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१६५ ।  
दशा—खण्डित । आ०—१६"x१.८" ।
- २१३—महाभारत-ज्ञानदीपिका टीका (तालपत्र) । प्र०—x । र०—x । लि०—x ।  
लि० का०—१७४१ सं० । वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१०४ ।  
दशा—खण्डित । आ०—१५.१२"x१.१२" ।



- २१४—काशीखण्ड-कथासंग्रह । प्र०—× । र०—× । लि०—× । कि० का०— ।  
वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—६५ । दशा—खण्डित । आ०—  
१४.८"×६" ।
- २१५—काशीखण्डकथासंग्रह । प्र०—× । र०—× । लि०—× । कि० का०—× ।  
वि०—पुराण । लिपि—मैथिली । प० सं०—६५ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१५.८"×३" ।
- २१६—श्रीमद्भागवत (गद्यानुवाद) । प्र०—× । र०—× । लि०—× । कि० का०—× ।  
वि०—पुराण । लिपि—बँगला । प० सं०—१४३ । दशा—खण्डित ।  
आ—१८"×३" ।
- २१७—गणेशखण्ड । प्र०—× । र०—× । लि०—देवशर्मा । कि० का०—१२८५  
साल । वि०—पुराण । लिपि—बँगला । प० सं०—१५२ । दशा—पूर्ण ।  
आ—१०"×४" ।
- २१८—देवीगीता । प्र०—× । र०—× । लि०—काशीनाथ शर्मा । लि० का०—× ।  
वि०—पुराण । लिपि—बँगला । प० सं०—१५ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१६"×३.४"
- २१९—पुरुषोत्तमाष्टात्म । प्र०—व्यास । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—  
सं० १८७७ । वि०—पुराण । लिपि—देवनागरी । प० सं०—८२ । दशा—पूर्ण  
आ—६.१२"×५"

### व्याकरण

- २२०—परिभाषेन्दुशेखर—काशिकाविवृति । प्र०—वैद्यनाथभट्ट । र०—दि० ०  
१८६६ । लि०—वैद्यनाथभट्ट । लि० का०—वि० सं० १८६६ । वि०—  
व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२७ । दशा—पूर्ण, मुद्रित ।  
आ०—१३"×४.१२" ।
- २२१—लघुशब्देन्दुशेखर—विषयी टीका । प्र०—राघवेन्द्र । र०—× । लि०—× ।  
लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१५० ।  
दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—१३.४"×५" ।
- २२२—वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा । प्र०—नागेश । र०—× । लि०—× ।  
लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१०८ ।  
दशा—खण्डित, मुद्रित । आ०—१०"×४.४" ।
- २२३—परिभाषेन्दुशेखर । प्र०—नागेश । र०—१८वीं शती । लि०—× । लि०

का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—x१ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—११"×४" ।

२२४—सारस्वतव्याकरणाभाष्य । ग्र०—काशीनाथ । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—५६ । दशा—खण्डित, । मुद्रित आ०—१०.८"×४.७" ।

२२५—प्राकृतप्रकाश (मनोरमा टीका-सहित) । ग्र०—वररुचि<sup>१</sup> । र०—चतुर्थ शताब्दी । टीका०—भामह । टी० र०—६ठीं शती । लि०—X । लि० का०—शाके १७६६ । वि०—प्राकृत व्याकरण, लिपि०—मैथिली । प० सं०—२२ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—११"×४" ।

२२६—सिद्धान्तकौमुदी । ग्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—४३२ । दशा—खण्डित । आ०—१०.८"×४" ।

२२७—समासवाद । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—४ । दशा—खण्डित । आ०—१८"×३.८" ।

२२८—वैयाकरणभूषण-परीक्षा टीका । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—७ । दशा—खण्डित । आ०—११.८"×४.१२" ।

२२९—शब्दकौस्तुभ । ग्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१३३ । दशा—खण्डित । आ०—११.४"×४.८" ।

२३०—लघुशब्दरत्न । ग्र०—नागेश । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१०१ । दशा—खण्डित । आ०—१२"×४.४" ।

२३१—सारस्वतप्रक्रिया (सटीक) । मूल ग्र०—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । टी०—वासुदेवभट्ट । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि० छ० का०—सं० १६२८ । वि०—व्याकरण ।

१—इस नाम के दो वैयाकरण हो चुके हैं । एक, पाणिनि (ई० पू० ५वीं शताब्दी) के बाद तथा पतञ्जलि ( ई० पू० १५० ) के पूर्व और दूसरे, गुप्तवंशीय महाराज विक्रमादित्य की समा के महाकवि कालिदास आदि नवतनों में से । परवर्ती वररुचि प्राकृत वैयाकरण थे ।

- लिपि—नागरी । प० सं०—६८ । दशा—तद्धितान्त । आ०—  
१४.१२"×५.१४" ।
- २३२—वैयाकरणभूषणसार । प्र०—कौण्डभट्ट । र०—१६वीं शती । लि०—× ।  
लि० का०—सं० १६३८ । वि०—व्याकरण । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१३ ।  
दशा—स्फोटवाद-पर्यन्त । आ०—६.१२"×४.८"
- २३३—शब्दकौस्तुभ । प्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× ।  
वि०—व्याकरण । लिपि—देवनागरी । प० सं०—५७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—६.४"×४" ।
- २३४—शब्दकौस्तुभ । प्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× ।  
वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—४४ । दशा—खण्डित ।  
आ०—६.४"×४" ।
- २३५—वैयाकरणभूषणसार । प्र०—कौण्डभट्ट । र०—१८वीं शती । लि०—× ।  
लि० का०—× । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—११६ ।  
दशा—खण्डित । आ०—१२.५"×४.१४" ।
- २३६—शब्दकौस्तुभ । प्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—× । लि० का०—× ।  
वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१२७ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१२"×४" ।
- २३७—आख्यातरहस्य । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—  
व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—१२ । दशा—खण्डित । आ०—  
१६"×३.८" ।
- २३८—आख्यातवाद । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—  
व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—२८ । दशा—खण्डित । आ०—  
१६×३.४" ।
- २३९—दौर्गसिद्ध्यवृत्ति । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× ।  
वि०—व्याकरण । लिपि—बैंगला । प० सं०—१३३ । दशा—खण्डित । आ०—  
१४.८"×३.१०" ।
- २४०—दौर्गसिद्ध्यवृत्ति । प्र०—× । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—  
व्याकरण । लिपि—बैंगला । प० सं०—८५ । दशा—खण्डित । आ०—  
१४"×३.८" ।
- २४१—वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद) । प्र०—कौण्डभट्ट । र०—१८वीं शती ।  
लि०—× । लि० का०—सं० १८३० । वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली ।  
प० सं०—३२ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×५" ।



२४२—परमलघुमञ्जूषा । प्र०—नागेश । र०—१८वीं शती । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—व्याकरण । लिपि—मैथिली । प० सं०—४६ । दशा—खण्डित । आ०—  
६.४"X४" ।

२४३—महाभाष्य ( प्रदीप-सहित ) । मू० प्र०—पतञ्जलि । र०—प्रसिद्ध । टीका०—  
कैयट । र०—१८वीं शती । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण ।  
लिपि—दे० ना० । प० सं०—२२१ । दशा—खण्डित । आ०—१२.४"X६" ।

२४४—महाभाष्य ( प्रदीप-सहित ) । मू० प्र०—पतञ्जलि । र०—प्रसिद्ध । टीका०—  
कैयट । र०—१८वीं शती । लि०—X । लि० का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—  
दे० ना० । प० सं०—८५ । दशा—खण्डित । आ०—११"X५" ।

२४५—प्रौढमनोरमा । प्र०—भट्टोजिदीक्षित । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६३ । दशा—  
खण्डित । आ०—११"X४.८" ।

२४६—आख्यातचन्द्रिका । प्र०—सुरसिंह । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१०८ । दशा—  
लकारार्थपर्यन्त । आ०—१२.४"X४.१२" ।

२४७—सारस्वतप्रक्रिया । प्र०—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । र०—प्रसिद्ध । लि०—आधुनाय ।  
लि० का०—१८७६ सं० । वि०—व्याकरण । लिपि—दे० ना० । प० सं०—६५ ।  
दशा—तद्धितान्त, पूर्ण । आ०—१२.४"X४.१२" ।

### छन्दःशास्त्र

२४८—वागीप्रकाश (वर्णवृत्तिनिरूपण) । प्र०—खेन्दु । र०—X । लि०—X ।  
लि० का०—वि० सं० १७७६ । वि०—छन्दःशास्त्र । लिपि—देवनागरी । प०  
सं०—४० । दशा—खण्डित । आ०—१०.८"X४.११" ।

२४९—छन्दोमञ्जरी । प्र०—गङ्गादास । र०—X । लि०—रामचन्द्र । लि० का०—  
वि० सं० १८५६ । वि०—छन्दःशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१६ ।  
दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—६"X४.२" ।

२५०—पिङ्गलसार (सारविकासिनी टीका-सहित) । मू० प्र०—X । टीका०—रविकर  
मिश्र । र०—X । लि०—X । लि० का०—X । वि०—छन्दःशास्त्र । लिपि—  
दे० ना० । प० सं०—४३ । दशा—खण्डित । आ०—१३.८"X५.८" ।

२५१—छन्दोवृत्ति । प्र०—हलायुध । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।

१—इनकी दो कृतियों के विषय में पता चलता है—(क) हलायुधकोश और  
(ख) छन्दोवृत्ति । इनका स्थिति-काल लगभग ७वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना  
जाता है । पञ्जीप्रबन्ध के अनुसार सोदरपुरिए मूल, जिस वंशक्रम में म० म०  
शङ्करमिश्र हो चुके हैं, के ये आदि पुरुष माने जाते हैं । इनका निवास अनुमानतः  
दरभङ्गा जिला के सरिसव-पाही गाँव में था ।

वि०—छन्दःशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—३२ । दशा—पूर्ण, मुद्रित ।  
आ०—११"×४.८" ।

२४२—वाणीभूषण । ग्र०—दामोदर । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—छन्दःशास्त्र । लिपि—दे० ना० । प० सं०—२६ । दशा—पूर्ण, मुद्रित ।  
आ०—१४"×४.६" ।

२४३—प्राकृतपिङ्गल । ग्र०—पिङ्गलाचार्य । र०—प्रसिद्ध । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—छन्दःशास्त्र । लिपि—मैथिली । प० सं०—२५ । दशा—  
खण्डित । आ०—१४.८"×३" ।

### आयुर्वेद

२४४—मोधवनिदान । ग्र०—माधव । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—आयुर्वेद । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१७२ । दशा—पूर्ण, मुद्रित ।  
आ०—१२"×४.१०" ।

२४५—रोगदर्पण । ग्र०—X । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—आयुर्वेद । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१६ । दशा—खण्डित ।  
आ०—१०.१०"×४.८" ।

२४६—वैद्यावतंस । ग्र०—लोलिम्बराज । र०—X । लि०—X । लि० का०—  
वि० सं० १८८६ । वि०—आयुर्वेद । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१३ । दशा—  
खण्डित, मुद्रित । आ०—१०"×४.८" ।

२४७—चक्रसंग्रह । ग्र०—चक्रपाणि । र०—वि० सं० १५५३ । लि०—X । लि०  
का०—X । वि०—आयुर्वेद । लिपि—देवनागरी । प० सं०—१८२ । दशा—  
खण्डित, मुद्रित । आ०—१०.४"×४" ।

२४८—शाङ्गधरसंहिता । ग्र०—शाङ्गधर । र०—X । लि०—X । लि० का०—X ।  
वि०—आयुर्वेद । लिपि—देवनागरी । प० सं०—५२ । दशा—एक अंश, पूर्ण ।  
आ०—१२"×४" ।

### प्रातिशाख्य एवं उपनिषद्

२४९—प्रातिशाख्य । ग्र०—कात्यायन । र०—३० पू० तृतीय शताब्दी । लि०—  
महादेव शर्मा । लि० का०—X । वि०—प्रातिशाख्य । लिपि—दे० ना० । प०  
सं०—१४ । दशा—पूर्ण, मुद्रित । आ०—८"×४.४" ।

२५०—जाबालोपनिषद् (सटीक) । मू० ग्र०—जाबाल । र०—X । टी० का०—  
श्रीशङ्करानन्द । टी० र०—X । लि० का०—X । वि०—उपनिषद् । लिपि—  
दे० ना० । प० सं०—२३ । दशा—खण्डित । आ०—१०.८"×३.८" ।

२५१—कालामिन्द्रोपनिषद् । ग्र०—X । र०—X । लि०—कालजीदास । लि०

१—ये महाकवि विद्यापति के आश्रयदाता महाराज कीर्तिसिंह के दरबार में रहते थे ।

का०—× । वि०—उपनिषद् । लिपि—दे० ना० । प० सं०—१० । दया—पूर्ण ।  
आ०—६.६"×४.४" ।

### धनुर्वेद

२१२—धनुर्वेद<sup>१</sup> । प्र०—सदाशिव । र०—× । लि०—× । लि० का०—× । वि०—धनुर्वेद ।  
लिपि—दे० ना० । प० सं०—७८ । दया—खण्डित । आ०—६.१२"×४.४" ।



१—इस ग्रन्थ का एवं ग्रन्थकार का नाम सुस्पष्ट नहीं है, किन्तु है यह धनुर्वेदविषयक एक महत्त्वपूर्ण सङ्कलित ग्रन्थ । यह वीरेश्वर और सदाशिव के धनुर्वेदविषयक रचनाओं का संग्रह है ।

सम्पूर्ण ग्रन्थ पाँच भागों में विभक्त है । (क) प्रथम भाग में चार विभाग (पाद) हैं—(अ) प्रथम पाद में धनुःप्रमाण, गुणफल, शरलक्षण, स्थानमुष्ट्याकर्षणलक्षण, गुणमुष्टि, मुष्टिसन्धान, लक्ष्य आदि विषयों का प्रतिपादन है और अन्त में है—‘इति वीरेश्वरीये धनुर्वेदप्रकरणे प्रथमः पादः ।’ (आ) द्वितीय पाद में धनुर्दानविधि, काल, शिष्य-परीक्षा, आचार्यलक्षण आदि का विचार है तथा अन्त में लिखा है—‘इति धनुर्दानविधिः ।’ (इ) तृतीय पाद में सामान्यश्रम-क्रिया, लक्ष्यस्खलन, शीघ्र सन्धान, दूरपाति, दृढचक्षुष्क, हीनगति, लक्ष्यस्खलन-विधि, शुद्धगति, बाणभङ्ग आदि का विचार किया गया है । (ई) चतुर्थ पाद में शस्त्रघटन, शस्त्ररक्षा, शस्त्रवारण, शकुन, व्यूह आदि का विचार है तथा अन्त में लिखा है—‘इति श्रीमान् महाराजाधिराज वीरविक्रमादित्य-संगृहीते वीरेश्वरीये धनुर्वेदप्रकरणे चतुर्थः पादः समाप्तः ।’

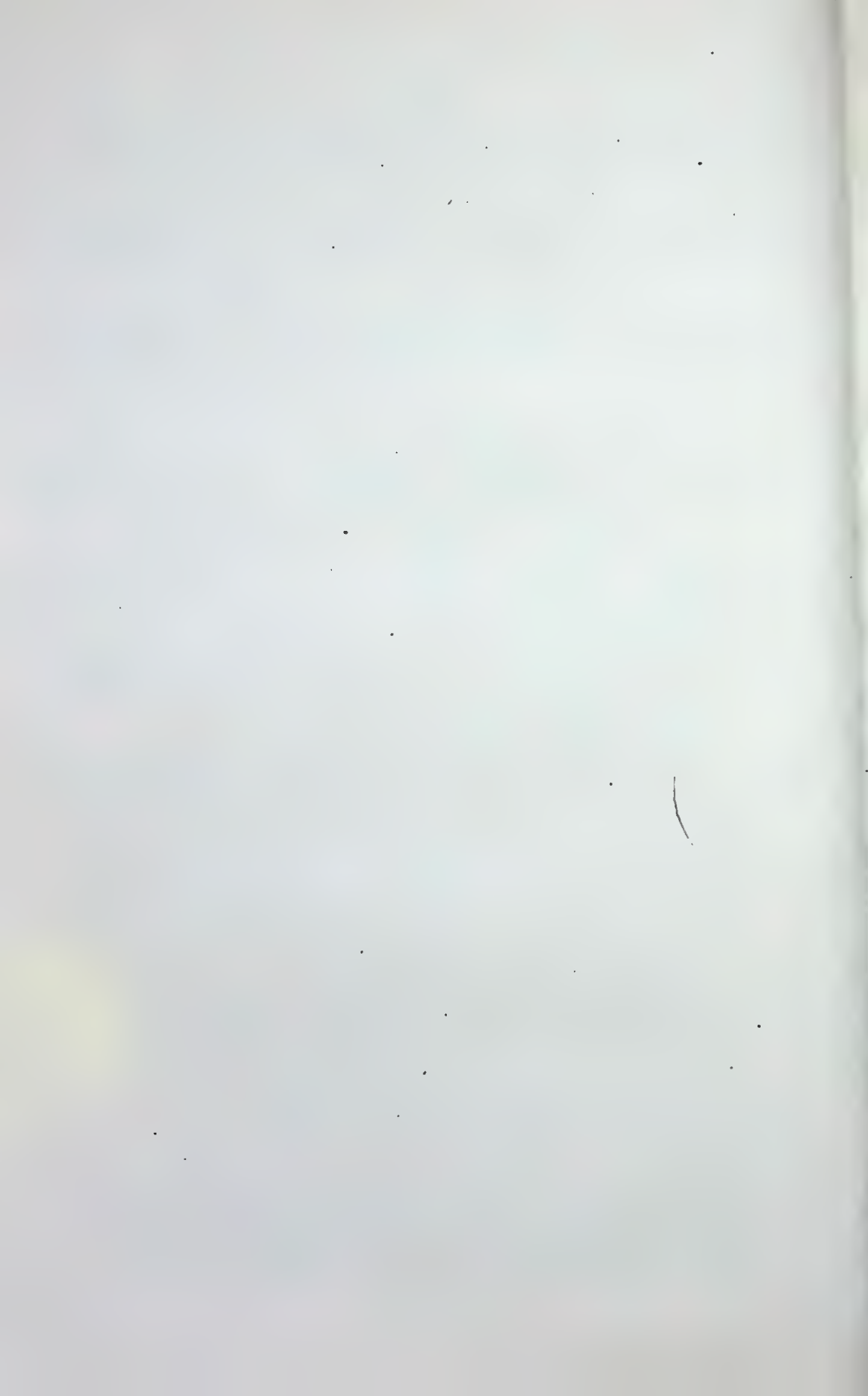
(ख) द्वितीय भाग छह विभागों (अध्यायी) में विभक्त है । प्रथम से षष्ठ अध्याय तक क्रमशः धनुर्लक्षणसूचना, धनुःशास्त्रीय मन्त्रावतार, बाणविक्षेपगुण, शकुन, धनुर्धारण तथा दिक्पाल का विचार किया गया है और अन्त में लिखा है—‘इति श्री भूभृद्दिलीपविरचिते कोदण्डशास्त्रे दिक्पालपूजाविधिमन्त्रोद्देशाध्यायः षष्ठः समाप्तः ।’

(ग) तृतीय भाग का विभाजन नहीं है । इस भाग में शस्त्रविधि, व्यूह आदि का विचार किया गया है तथा अन्त में लिखा है—‘इति श्रीसदाशिवप्रोक्ता धनुर्विद्या समाप्ता ।’

(घ) चतुर्थ भाग का भी विभाजन नहीं है । इस भाग में धनुर्धर-प्रशंसा, धनुर्दान, धनुर्धारणविधि, धनुःप्रमाण, गुणलक्षण, फललक्षण, गुणमुक्तिलक्षण, धनुर्मुष्टिलक्षण, लक्ष्यलक्षण, शरलक्षण, अनध्याय, क्रियाकलाप, श्रमक्रिया, लक्ष्यसञ्चलनविधि, शीघ्रसाधन, दूरपातित्व, दृढप्रहारता, हीनगति, धनुर्गति, शब्दमेदी, शस्त्रवारण संग्रामविधि, अचौहिणी, व्यूह, शुद्ध आदि विषयों पर विवेचन किया गया है तथा अन्त में, ‘इति श्री सदाशिवप्रोक्ता धनुर्वेदः समाप्तः’ लिखा है ।

(ङ) पञ्चम भाग का विभाजन परिच्छेद के रूप में किया है । यह भाग केवल तृतीय परिच्छेद का खण्डित अंश है तथा इसमें धनुर्विक्षेप का विचार किया गया है । भागान्त में लिखा है—‘इति श्री भूभृद्दिलीपविरचिते धनुःशास्त्रे विक्षेपगुणपारधी-विचारनामकस्तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ।’ खण्डित होते हुए भी यह ग्रन्थ अनुसन्धेय है ।





## प्रथम परिशिष्ट

### अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

[ग्रन्थों के सामने कोष्ठकों में अंकित संख्याएँ विवरणान्तर्गत क्रम-संख्याएँ हैं ।]

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
१.	अद्वैतलक्षणचन्द्रिका (१०४)	दर्शन (वेदान्त)	×	×	खण्डित
२.	अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारण- भावः (११५)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
३.	अनुमितेर्मानसत्वनिराकरण (१११)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
४.	अनेकार्थध्वनिमञ्जरी (५६)	काव्य	×	×	खण्डित, लिपिकार- मत्त गजराज
५.	अवच्छेदकावच्छेदनानुमिति- विचार (११०)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	खण्डित
६.	आख्यातरहस्य (२३७)	व्याकरण	×	×	खण्डित
७.	आख्यातवाद (२३८)	व्याकरण	×	×	खण्डित
८.	इतिहाससमुच्चय (२०८)	इतिहास	×	१६३८ वि०	लिपिकार- चतुर्भुज शर्मा
९.	उडुशतन्त्र (१६८)	आगम (तन्त्र)	×	×	खण्डित
१०.	कर्मविपाकसंहिता (२१२)	पुराण	×	१६७४	लिपिकार- शकाब्द रघुनेन्दन; लिपि- मैथिली (तालपत्र)
११.	कालनिर्णयदीपिका (१४१)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित
१२.	कालाग्निरुद्रोपनिषद् (२६१)	उपनिषद्	×	×	लिपिकार- लालजीदास
१३.	काशीखण्ड-कथा-संग्रह (२१४)	पुराण	×	×	खण्डित
१४.	काशीखण्ड-कथा संग्रह (२१५)	पुराण	×	×	खण्डित

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
१५.	गणेशखण्ड (२१७)	पुराण	×	१२८५ फसली	लिपिकार— देवशर्मा
१६.	गौरीशङ्करप्रतिष्ठाविधि (१५४)	कर्मकाण्ड	×	×	
१७.	तत्त्वचिन्तामणिदीधिति- प्रकाश (१०७)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	४७७	लिपिकार— परमानन्द, खण्डित; लिपि—मैथिली (तालपत्र)
१८.	त्रिविधान्मुक्त सागर-सार (२०५)	पुराण	×	×	खण्डित
१९.	देवीगीता (२१८)	पुराण	×	×	लिपिकार— काशीनाथशर्मा
२०.	दौर्गासिंहीय वृत्ति (२३६)	व्याकरण	×	×	खण्डित
२१.	दौर्गासिंहीय वृत्ति (२४०)	व्याकरण	×	×	खण्डित
२२.	धर्मप्रवृत्ति (१४२)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित
२३.	धर्मशास्त्रनिबन्ध (१५५)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित, लिपि— मैथिली (तालपत्र)
२४.	नरसिंहपुराण (२०४)	पुराण	×	×	
२५.	नलोदयकाव्य-टीका (५६)	काव्य	×	×	लिपिकार— जगदीश
२६.	नृसिंहतन्त्र (१६३)	आगम (तन्त्र)	×	×	
२७.	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी (१०८)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
२८.	न्यायादर्श (१०६)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
२९.	पदार्थतत्त्व (१०५)	दर्शन	×	×	खण्डित
३०.	पिङ्गलसार (२५०) (सारविक्रान्तिनी टीका)	छन्दःशास्त्र	×	×	खण्डित
३१.	प्रामाण्यवाद (११६)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	
३२.	बिहारी सतसई (संस्कृत- टीका (५४)	काव्य	×	×	खण्डित
३३.	ब्रह्मवैवर्तपुराण (कृष्ण- जन्म खण्ड) (२०३)	पुराण	×		



क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
३४.	भगवद्भक्तिरत्नावली (२०७)	पुराण	×	१८५० वि०	लिपिकार- श्यामदास
३५.	भैरवतन्त्र (मन्त्र-संकेत- संग्रह) (१६४)	आगम (तन्त्र)	×	×	
३६.	मन्त्रतन्त्रकोष्ठक- चिन्तामणि (१८३)	आगम	×	×	खण्डित
३७.	महाभारत ज्ञानदीपिका टीका (२१३)	पुराण	×	१७४१ वि०	खण्डित; मैथिली (तालपत्र)
३८.	मुहूर्त्तमार्तण्ड (१७३)	ज्योतिष	×	१६१० वि०	लिपिकार- उजागरशर्मा
३९.	योगवासिष्ठसार (१२५)	योग-दर्शन	×	×	
४०.	योगवासिष्ठसार (१३०)	योग दर्शन	×	१८६३ वि०	लिपिकार- हरिकृष्ण
४१.	राधामेक्तिमञ्जूषा (२०६)	पुराण	×	×	
४२.	रोगदर्पण (२५५)	आयुर्वेद	×	×	खण्डित
४३.	वर्णभैरवतन्त्र (२०१)	आगम-शास्त्र	×	×	
४४.	वाक्यसुधाटीका (६३)	दर्शन	×	×	खण्डित
४५.	वीरतन्त्र (भैरवीतन्त्र) (१६०)	आगम (तन्त्र)	×	१७२६ वि०	लिपिकार- नीलकण्ठ
४६.	वीरभद्रमहातन्त्र (१८८)	आगम-शास्त्र	×	×	खण्डित
४७.	वैयाकरणभूषण-परीक्षा टीका (२२८)	व्याकरण	×	×	खण्डित
४८.	व्युत्पत्तिवाद (११२)	दर्शन (तर्कशास्त्र)	×	×	खण्डित
४९.	शक्तिवाद (११४)	तर्कशास्त्र	×	×	खण्डित
५०.	शारदातिलक (१६६)	आगम	×	×	
५१.	शारदातिलक (२००)	आगम	×	१६१३ वि०	लिपिकार - उजागर शर्मा
५२.	श्रीमद्भागवत गद्यानुवाद (२१६)	पुराण	×	×	खण्डित, बँगला- लिप्यन्तरण
५३.	सन्निकर्षनिरूपण (११७)	तर्कशास्त्र	×	×	खण्डित
५४.	समासवाद (२२७)	व्याकरण	×	×	खण्डित

क्रम-सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	र०का०	लि०का०	विशेष
५५.	सरोजसुन्दर (१६०)	कर्मकाण्ड	×	१८५० वि०	
५६.	सांख्यसूत्रवृत्ति (६६)	सांख्य-दर्शन	×	१६६८ वि०	लिपिकार- हरिकृष्ण
५७.	सूर्यसिद्धान्त (१८४)	ज्यौतिष	×	१८५५ वि०	लिपिकार- उमापति
५८.	स्फुट श्लोक-संग्रह (८७)	प्रकीर्ण काव्य	×	×	
५९.	स्मार्त्तोल्लास (१३८)	धर्मशास्त्र	×	×	खण्डित
६०.	स्वरोदयशास्त्र (१२१)	दर्शन	×	×	
६१.	हरिहर पारायण (६३)	काव्य	×	१८८८ वि०	खण्डित

## द्वितीय परिशिष्ट

### क. ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ ग्रंथों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई कम-संख्याएँ हैं । ]

अद्वैतनिर्णयपदीप—१४७	कालीकल्पलता—१६५
अद्वैतलक्षणचन्द्रिका—१८४	काशीखण्ड-कथा-संग्रह—२१४, २१५
अध्यात्मरामायण—६४	किरातार्जुनीय—८१
अध्यात्मरामायण—७६	कुँवरसिंहचरित—५२
अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारणभावः—११५	कुमारसम्भव—८६
अनुमितेर्मानसत्वनिरूपण—१११	कृपासिन्धु—१७०
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी—५६	गणेशखण्ड—२१७
अमरशतक—६६	गीतगोविन्द—८०, ८२, ६६
अलंकारमञ्जरी—७०	गृह्यसूत्र—१४४
अवच्छेदकताविचार (क्रोडपत्र)—१३४	गौडपादभाष्य—१०१
अवच्छेदकावच्छेदेनानुमितिविचार—११०	गौरीशङ्करप्रतिष्ठाविधि—१५४
आख्यातचन्द्रिका—२४६	ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण—१६६
आख्यातरहस्य—२३७	चक्रसंग्रह—२५७
आख्यातवाद—२३८	छन्दोमञ्जरी—२४६
आगमशास्त्रविवरण—२०२	छन्दोवृत्ति—२५१
आचार्यानुमान-रहस्य—११८	जातकपद्धति—१८०
आत्मबोध—६४	जाबालोपनिषद्—२६०
आह्निकम्—१६१	ज्यौतिषरत्नमाला—१७५, १७६
इतिहाससमुच्चय—२०८	तडागोत्सर्गपद्धति—१५२
उडुशतन्त्र—१६८	तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाश—१०७
ऋतुसंहार—८८	तर्कभाषा—१२६
एकादशीतत्त्व—१६५	ताराभक्तिमुधारणव—१६१, १६७
कर्मविपाकसंहिता—२१२	तिथितत्त्वचिन्तामणि—१६८
कविकर्पटी—५३	त्रिविधाद्भुतसागर-सार—२०५, २११
कविकल्पलता—६५	दशकुमारचरित—८५
कालनिर्णयदीपिका—१४१	दशमात्रा—१६३
कालाग्निरुद्रोपनिषद्—२६१	दुर्गासप्तशती—७८



देवीगीता—२१८  
 दौर्गासिंहीयवृत्ति—२३६, २४०  
 द्वैतनिर्णय—१४६  
 धनुर्वेद—२६२  
 धर्मप्रवृत्ति—१४२  
 धर्मशास्त्रनिबन्ध—१५५  
 नरसिंहपुराण—२०४  
 नलोदयकाव्य—५६  
 नवरत्न—१७२  
 नृसिंहतन्त्र—१६३  
 नेपालपञ्चविंशतिका—७५  
 न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—१०८  
 न्यायादर्श—१०६  
 पञ्चता गादाधरी—१२३  
 पञ्चताविचार—१३३  
 पदार्थतत्त्व—१०५  
 परमलघुमञ्जूषा—२४२  
 परामर्श गादाधरी—१२७  
 परिभाषेन्दुशेखर—२२३  
 परिभाषेन्दुशेखर-काशिका विवृति—२२६  
 पाराशरी स्मृति—१४०  
 पिङ्गलसार—२५०  
 पुरुषोत्तम महात्म—२१६  
 पुष्टिप्रवाहमर्यादाविवरण—१४३  
 प्रत्यक्तत्त्वप्रदीपिका—१८७  
 प्रश्नपरामर्श—२०६  
 प्राकृतपिङ्गल—२५३  
 प्राकृतप्रकाश—२२५  
 प्रातिशाख्य—२५६  
 प्रामाण्यवाद—११६  
 प्रायश्चित्तप्रदीपिका—१४५  
 प्रौढमनोरमा—२४५  
 विहारी सतसई—५४  
 नृहजातक—१७६  
 ब्रह्मनिरूपण—१०२  
 ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—२०३

ब्राह्मणसर्वस्व—१४८  
 भगवद्भक्तिरत्नावली—२०७  
 भामिनीविलास—५५  
 भास्वतीविवरणटीका—१८१  
 भुवनदीपक—१८३  
 मकरन्दविवरण—१८५  
 मन्त्रप्रदीप—१५१  
 मन्त्रमहोदधि—१५०, १६६  
 मलमासतत्त्व—१६४  
 महाभारत ज्ञानदीपिका टीका—२१३  
 महाभाष्य—२४३, २४४  
 महावीरचरित—६०  
 माधवनिदान—२५४  
 मालतीमाधव—७७  
 मीमांसारत्न—६८  
 मुद्राराक्षस—७२  
 मुरारिनाटक (अनर्घराघव)—७१  
 मुहूर्त्तगणपति—१७४  
 मुहूर्त्तचिन्तामणि—१८२  
 मुहूर्त्तभूषण—१७८  
 मुहूर्त्तमार्त्तण्ड—१७३  
 याज्ञवल्क्यस्मृतिधर्मशास्त्रीय विवृति टीका  
 —१५६  
 यात्रातत्त्व—१८६  
 योगवासिष्ठसार—१२५, १३०  
 योगसूत्र—१२८  
 रघुवंश—७६  
 रत्नद्योत—१७७  
 रसकौस्तुभ—८३  
 रसतरङ्गिणी—६८  
 रसपारिजात—६७  
 राधाभक्तिमञ्जूषा—२०६  
 रामगीत—८६  
 रंगदर्पण—२५५  
 लघुशन्दरत्न—२३०

लघुशब्देन्दुशेखर विषमी टीका—२२१

लिङ्गार्चन-चन्द्रिका—१४६

वर्णभैरवतन्त्र—२०१

वाक्यसुधा—६३

वाणीप्रकाश (वर्णवृत्ति-निरूपण)—२४८

वाणीभूषण—२५२

वामनपुराण—२१०

विदग्धमुखमण्डन—५०, ६१

विधिरसायन—६६

विषयताथाद—११३

वीरतन्त्र (भैरवीतन्त्र) | १६०

वीरभद्रमहातन्त्र—१८८

वीरविरुदावली—६६

वेदान्तपरिभाषा—१०६

वेदान्तसंज्ञा-प्रक्रिया—६५

वेदान्त-सार—१२४

वेदान्त-सार-सुबोधिनी टीका—६२

वैयावतंस—२५६

वैयाकरणभूषण-परीक्षा टीका—२२८

वैयाकरणभूषण-सार—२३२, २३५, २४१

वैयाकरणसिद्धान्त-मञ्जूषा—२२२

व्यधिकरणविचार—१३५

व्याप्तिपञ्चकटीका—१३६

व्युत्पत्तिवाद—११२

शक्तिवाद—११४

शब्दकौस्तुभ—२२६, २३४, २३६

शम्भुहोराप्रकाश—१७१

शारदातिलक—१६६-२००

शारीरिक मीमांसा-भाष्य—१२२

शाङ्गधरसंहिता—२५८

शास्त्रदीपिका—६७

शिवलिङ्गप्राणप्रतिष्ठा-विधि—१५७

शिशुपालवध—५८

शिशुपालवध-जाख्यापहारिणी टीका—५७

शिशुपालवध-टीका—८४

शुद्धितत्त्व—१६६

शुद्धिनिर्णय—१६३

शुद्धिविवेक—१५३, १५६, १६२

शुभकर्मनिर्णय—१६७

श्राद्धचिन्तामणि—१५८

श्रीमद्भगवद्गीता—११६

श्रीमद्भगवद्गीता—१२६

श्रीमद्भगवत् (गद्यानुवाद)—२१६

श्लोक-संग्रह—८७

सन्निकर्ष-निरूपण—११७

सप्तशती-व्याख्या—७३

समासवाद—२२७

सरोज-सुन्दर—१६०

सव्यभिचार-टीका (क्रोडपत्र)—१३१

सांख्यतत्त्व-कौमुदी—१००

सांख्यसूत्र-वृत्ति—६६

सारस्वतप्रक्रिया—१४७

सारस्वतप्रक्रिया (सटीक)—२३१

सारस्वतव्याकरण-भाष्य—२२५

सिद्ध-खण्ड (यज्ञिणी-साधन)—१६२

सिद्धान्तकौमुदी—२२६

सूर्यसिद्धान्त—१८४

सौन्दर्यलहरी—७४

स्मार्त्तोत्प्लास—१३८

स्मृतितत्त्व—१३६

स्वरोदयशास्त्र—१२१

हठप्रदीपिका—१२०

हरिहरपारायण—६३

हेत्वाभास-सामान्य-निरूपण—१३२

## ख. मिथिलाक्षर में लिखित ग्रंथों की अनुक्रमणिका

( ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं । )

अद्वैतनिर्णयप्रदीप—१४७	प्रामाण्यवाद—११६
अध्यात्मरामायण—६४	ब्रह्मवैवर्तपुराण—२०३
अनुमितिपरामर्शयोः कार्यकारणभावः—११५	भैरवतन्त्र—१६४
अनुमितेर्मानसत्वनिराकरण—१११	मन्त्रप्रदीप—१५१
अवच्छेदकावच्छेदेनानुमितिविचार—११०	महाभारत शानदीपिका—२१३
आख्यातवाद—२३८	मालतीमाधव—७७
आचार्यानुमानरहस्य—११८	योगवासिष्ठसार—१२५
आह्निकम्—१६१	योगसूत्र—१२८
उड्डीशतन्त्र—१६८	रसकौस्तुभ—८३
कर्मविपाकसंहिता—२१२	रसपरिजात—६७
कविकल्पलता—६५	लघुशब्दरत्न—२३०
काशीखण्ड-कथासंग्रह—२१४, २१५	विषयतावाद—११३
गौरीशङ्करप्रतिष्ठाविधि—१५४	वीरविष्णुदावली—६६
छन्दोवृत्ति—२५१	वेदान्तसार—१२४
तडागोत्सर्ग-पद्धति—१५२	वैयाकरणभूषण-परीक्षा टीका—२२८
तत्त्वचिन्तामणि-दीधितिप्रकाश—१०७	वैयाकरणभूषण-सार (स्फोटवाद)—२४१
तारामक्ति-सुधारण्व—१६७	वैयाकरणसिद्धान्त-मञ्जूषा—२२२
तिथितत्त्वचिन्तामणि—१६८	व्युत्पत्तिवाद—११२
त्रिविधान्द्रुतसागर-सार—२०५, २११	शक्तिवाद—११४
दशकुमार-चरित—८५	शब्दकौस्तुभ—२२६
दुर्गा-सप्तशती—७८	शिशुपालवध-टीका—८४
द्वैत-निर्णय—१४६	शिशुलिङ्ग-प्राणप्रतिष्ठाविधि—१५७
धर्मशास्त्र-निबन्ध—१५५	शुद्धिनिर्णय—१६३
नरसिंहपुराण—२०४	शुद्धिविवेक—१५३
नृसिंहहस्त—१६३	शुभकर्मनिर्णय—१६७
पक्षता गादाधरी—१२३	श्राद्धचिन्तामणि—१५८
परमलघुमञ्जूषा—२४२	श्रीमद्भगवद्गीता—१२६
परामर्श गादाधरी—१२७	सन्निकर्ष-निरूपण—११७
परिभाषेन्दुशेखर—२२३	समासवाद—२२७
प्राकृतपिङ्गल—२५३	सिद्धान्त-कौमुदी—२२६



### ग. वंगाक्षर में लिखित ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं । ]

अध्यात्मरामायण—७६	याशवलक्यस्मृति-धर्मशास्त्रीय चिन्तिटीका—१५६
एकादशी-तत्त्व—१६५	
गणेशखण्ड—२१७	यात्रातत्त्व—१८६
देवीगीता—२१८	रघुवंश—७६
दौर्गासिंहीय वृत्ति—२३६, २४०	वर्णभैरव तंत्र—२०१
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—१०८	शुद्धितत्त्व—१६६
न्यायादर्श—१०६	श्रीमद्भागवत (गद्यानुवाद)—२१६
मलमास-तत्त्व—१६४	

### घ. ताल-पत्र पर लिखित ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं । ]

कर्मविपाकसंहिता—२१२	मालतीमाधव—७७
तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाश—१०७	रसपारिजात—६७
दुर्गासप्तशती—७८	शिशुपालवध टीका—८४
धर्मशास्त्र-निबन्ध—१५५	श्रीमद्भगवद्गीता—१२६
महाभारत-ज्ञानदीपिका टीका—२१३	

### ङ. ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

[ ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई ग्रन्थ-संख्या की क्रम-संख्याएँ हैं । ]

अनुभूतिस्वरूपाचार्य—२३१, २४७	कालिदास—५६
अप्पय्यदीक्षित—६६	काशीनाथ—२२४
अमरकवि—६६	कृपाराम—१७०
उमापति—१६३	केशवमिश्र—१२६
कबीरदास—१०२, १०३	कौण्डभट्ट—२३२, २३५, २४१
कल्याण—१५७	गङ्गादास—२४६
कवि कालिदास—७६, ८८, ८९	गङ्गाराम—१७७
कात्यायन—२६०	गणपति—१७४

गदाधर भट्टाचार्य—११३, ११८, १२३  
१२७

गोकुलनाथ—१४७

गौडपाद—१०१

चक्रपाणि—२५८

चतुर्भुज—२११

चन्द्रशेखर—२०६

चित्तुख—१८७

जगदीश—१३१, १३२, १३३, १३४,  
१३५, १३६

जगन्नाथ—५५

जयदेव—८०, ८२, ८६, ९१

जावाल—२६१

दण्डी—८५

दामोदर—२५२

दिवाकर—१८५

देवेश्वर—६५

दैवशराम—१८२

धर्मदास—६०, ६१

धर्मराज दीक्षित—१०६

नरसिंह ठाकुर—१९१, १९७

नरसिंह सरस्वती—९२

नागेश—२२२, २२३, २३०, २४२

नागोजिभट्ट—७३

नित्यानन्दसिंह—१९२

पतञ्जलि—१२८, २४४

पद्मसूरि—१८३

परमसुखोपाध्याय—१७२

पारस्कर—१४४

पाराशर—१४०

पार्थसारथिमिश्र—९७

पिंगलाचार्य—२५३

पीताम्बर—१४३

पुञ्जराज—१७१

भट्टोजिदीक्षित—२२६, २२९, २३३,  
२३४, २३६, २४५

भवभूति—७७, ९०

भानुदत्त मिश्र—६७, ६८

भारवि—८१

भास्कराचार्य—१४५

महाधन—५७

महीधर—१५०, १७९, १९९

महेश ठाकुर—१६८

माध—५८, ८४

माधव—२५५

माधवमिश्र—१८१

मुरारिमिश्र—७१, १६७

रघुदेवमिश्र—६६

रघुनन्दन भट्टाचार्य—१३९, १६५, १६६,  
१८६

रघुनाथ भट्टाचार्य—९८, १६४

रघु शर्मा—१५२

राघवेन्दु—२४८

राघवेन्द्र—२२१

रुद्रधर—१५३, १५९, १६२

रूपनाथ—१६१

लोलिम्बराज—२५७

वररुचि—२२५

वाचस्पतिमिश्र (१)—१००

वाचस्पतिमिश्र—(२)—१४६, १५८

वासुदेवभट्ट—२३१

विज्ञानेश्वर—१५६

विमर्शानन्दनाथ—१९५

विशाखदत्त—७२

विश्वनाथ—१६९

वेणीदत्त—८३

वैद्यनाथ सा—२२०

व्यास—७८, ७९, ११९, १२६, २१०  
२१९

व्रजभूषणमिश्र—१७८

शंकरमिश्र—९१

शंकराचार्य—७४, ६३, ६४, ६५, १२२  
शंखोदरभट्ट—५३  
शाङ्गधर—२५४, २५६  
शिवकुमारमिश्र—५२  
शिवदास—७५  
श्रीधर स्वामी—१३७  
श्रीपतिभट्ट—१७५, १७६, १८०

सदानन्द—१२४  
सदाशिव—१४६, २६३  
सूरसिंह—२४६  
स्वात्माराम—१२०  
हरपति—१५१  
हरिदास—६२  
हलायुध—८४८, २५१



## तृतीय परिशिष्ट

महन्त्रपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्रातः ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			विशेष
		रचना-काल	लिपि-काल	प्रातः प्रतिलिपि की संख्या	
अनुभूति-स्वरूपार्थ	१. सारस्वत प्रक्रिया	१६६२ वि०	४१	आ० शा० भं० जै० ग्रं० क० प्रा० ता० ग्रं० सू० जै० सि० भं०, आ० सू० रा० जै० शा० भं०, ग्रं० सू०; भाग २ रा० जै० शा०, भं० ग्रं० सू०; भाग २	२ १०१, ६६८, १११, ११२ (पृ० सं० ११४) छ० जं० ५१०, ५१८, ५४० दि० जै० गं० लूणकरजी पांड्या (भरतपुर) के ग्रं० सं०-२८, प्रति सं०-२६८ दि० जै० मं० वड़ा-तेरह पथियों के (त्रयपुर) ग्रन्थ ग्रं० सं० १११, प्रति सं० १५४४, वेष्टन-नं० २०२६
				१८०३ वि०	वालबोधिनी टीका-सहित, टी० का० पं० मिश्र वासव । कन्नड़-लिपि में लिखित ।

१६२२ वि०  
१६५७ वि०  
१६४३ वि०  
१८४६ वि०  
१६७५ शका०  
१६४२ वि०  
१८६३ वि०  
१८४२ वि०  
१८४१ वि०  
१८२१ वि०  
१७७६ वि०  
१८३८ वि०  
१८४० वि०  
१८७३ वि०

सिन्धी जैन सरीज नं० ३७,  
भाग-४  
सिन्धी जैन शास्त्र शिक्षार्पीठ,  
भा० वि० भ० मन्मदई

डि० कैट० ऑफ स० मै०  
इन् दि अडयार लाइ०,  
भाग ६  
न्यू० कैट० कैटलो०, यू० म०  
आ० श० भ० ज० ग्र०

ग्र० सं०-११

६६० से ६७७ तक

पृ० सं०-१५८

पृ० १४१  
" १४२  
" १४३  
" १४४  
" १५४  
" १६६  
" १४७  
" १२८  
" १४८  
" १५०

पंजराज कुतन्दीका, टीका-काल-  
१४७५ ई० से १५३० ई० के  
बीच। अडयार लाइब्रेरी बुलेटिन,  
भाग ५, खण्ड ३ पृष्ठ १-५  
पर आधृत।  
६७३ संख्याक ग्रन्थ ओडिया-  
लिपि में लिखित।

अनेक विवरण-सहित।

इसके लिपिकार ने महाराजा  
दौलतराव सिधिया का उल्लेख  
किया है।

प्रतिष्ठान-नाम	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ संख्या				विशेष
		लिपि-काल	प्रतिष्ठान-नाम	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१ अनुभूति स्वरूपाचार्य	१. सारस्वत प्रक्रिया	१६२७ वि० १६२८ वि० १८७६ वि०	१०५	वि० रा० भा० प० " सी० सी० पार्ट १ सी० सी० पार्ट २ सी० सी० पार्ट ३ सी० एस्० सी० भॉल्यू० ६, ए० सी० पार्ट १ ट्री, कैट० भॉल्यू० ३ एच्० पी० एस्० पार्ट १ बी० एम्० (१६०८) सी० पी० बी० पी०	१ खं० (सं०) १२, ३७, ५ ५ खं० २३१, २४७. ट्ट० ४८६ ट्ट० ११३ २११ ट्ट० १०४ ट्ट० ७६ ट्ट० ११७ ट्ट० २७७३ ट्ट० २१ (१६०५) ६२८१ ३६८	
२ कालिदास (कवि)	१. रघुवंश					



११६३६-७६

देस० खं० ६६ सं०  
वि० रि० सो० डि० कैट०  
मैन० इन मिथिला खं० २,  
डि० कैट० ऑफ० मं० मे०  
इन् दि अ० ला० खं० ५  
पृ० ७०-१००,

ग्रं० सं० ११४, A. B.,

पृ० सं० ११८

ग्रं० सं०-२०५-२६१

(न्द ग्रंथ)

इस संग्रह में आन्ध्र और द्रविड़  
भाषा की टीकाएँ हैं और तमिल,  
तेलुगु एवं कन्नड-लिपियों में  
लिखित पाण्डुलिपियाँ हैं।

पृ० १३०-१३१, ग्रं०

सं० १५५ (प्र० सं०

१२७), २४० (प्र० सं०

१२८), ३४६ (प्र० सं०

१२८), ४६६ (प्र० सं०

१३०), ५५७ (प्र० सं०

१३१)

पृ० सं० ३०६ (ले० सं०

४६)

क० प० ता० ग्रं० सू०  
सिंधी जैन सरीज नं० ३७  
(श्रीबहादुर सिंघ सिंधी  
मेमोरीज खं० ४) स्टडीज  
इन इंडियन लिटरी हिस्ट्री,  
भाग-१

ग्रंथ-संख्या	ग्रंथकार	ग्रंथ-नाम	रचना-काल	लिपि-काल	प्रमाण-संख्या	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	विशेष
२.	कालिदास (कवि)	२. ऋतु- संहार		८		सी० सी०, ख०-१ " ख०-२ " ख०-३ बी० एम्-१६०८ सी० पी० बी० पी० वि० रि० सो० (डि० कैट० मैन० इन् मि०) ख० २ डि० कै० ऑफ स० मै० इन् दी अ० ला० ख० ५ सी० सी० ख० १ " ख० २ " ख० ३ सी० एस् सी० भाग-३ ए० सी० ख० १ एच् पी० एस् भाग-१ (१६०५) (१६०८) बी० एम् (१६०८)	पृ० ७३ पृ० १४ पृ०-१६ पृ०-२७५ पृ०-५५ पृ०-२०, २१, ग्रं० सं०- २०, ए० पृ०-१४६, ग्रं० सं० ४५४ पृ० ११० पृ० २२ पृ० २४ पृ० १४ पृ० ११० पृ० १२ पृ० २७५	दोनों पाण्डुलिपि क्रमशः पं० शिव दत्त झा बरारी, परसामा, भागल- पुर और पं० मार्कण्डेय मिश्र, चेनौर, मनिगाछी, दरभंगा के पास संग्रहीत है।
		३. कुमार- सम्भव		२७				

कालिदास  
(मिश्र)  
(मिथिला-  
वासी)?-

१. नलोदय  
काव्य

१६६१  
शक्राब्द

१६५४  
ई०

सी० पी० वी० पी० ८६  
डिस० खं० ६६  
वि० रि० सो० (डि० कैट०  
ऑफ़ सैन० इन् मि०)  
भाग-२\*

डि० कैट० ऑफ़् सं० मे०  
इन् अ० ला० खं० ५

२३

सी० सी० खं०-१  
" " -२  
" " -३

सी० एस् सी० भाग-६  
ट्री० कैट० भाग-३  
वी० एम० (१६०८)  
सी० पी० वी० पी०  
डिस० ६६

सं० ११४६४

पृ० २८, ग्रं० सं० २६,  
ए०, बी०

पृ० १६-२३, ग्रं० सं०  
३०, ३१, ३२, ३३,  
३४, ३५, ३६, ३७,  
३८, ३९, ४०, ४१,  
४२, ४३, ४४, ४५,

पृ० २८०

पृ० ६०, २०७

पृ० ६०

पृ० ३२

पृ० ३७, ३८

पृ० २८६

२२७

सं० ११८४३

\* पाण्डुलिपियाँ क्रमशः पं०  
वासुदेव झा, वरही, नौहटा,  
भागलपुर; पं० बाबुजन झा,  
शासीपुर, जोगियावा, दरभंगा और  
फ़ुल झा, वरारी, परसामा, भागल-  
पुर के पास संकलित हैं।



ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		लिपि-काल	लिखित-प्रमाण	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
४. कौण्डिलभट्टः	१. वैयाकरण भूषण-सार	१६८२ शकाब्द = ल० सं० ६५३ = १८२१ वि०, ६७७ ल० सं०	१६	वि० रि० सो० (डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि०) खं० २* डि० कै० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला० खं० ५	पृ० ६६, ६७, ग्रं० सं० ६३, ए०, बी०  पृ० १७५-१७८, ग्रं० सं० ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१	॥ गण्डुलिपियाँ क्रमशः—१. पं० आदित्यनाथ मिश्र, पट्टल, मनि- माछी, दरभंगा; २. पं० यदुनन्दन ठाकुर, सर्वसिया, भंभारपुर, दरभंगा; ३. पं० वासुदेव मिश्र, सलेमपुर, घटाहो, दरभंगा, के पास सुरक्षित हैं।
			१६	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दी० अ० लाइ० भाग-६	पृ० २१४—२१८, ग्रं० सं०—५६०—५७३ (तेरह प्रतियाँ; तेलुगु तथा अन्य दक्षिणी लिपियों में)	॥ रंगोजिमट्ट के पुत्र और प्रसिद्ध भट्टोजिदीक्षित के श्राव्य, वैया- करणभूषणसार के मंगलाचरण में— “वाग्देवी यस्य जिह्वाग्रं नर्गनन्ति सदा मुदा । भट्टोजिदीक्षितमहं पितृव्यं नौमि सिद्धये ॥३॥”— स्पष्ट नामोल्लेख किया है । न्यू० के० कैट०, पू० म० १६४६ पृ० सं० ३०२, ३०३ ।
मदाधर भट्टाचार्य	१. विषयता- वाद	१८३० वि० १८३८ वि०	१६	प्रा० ह० लि० पो० का खोज-वि० (वि० रा० भा० प० पट० खं० ५) डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि० अ० लाइ० भाग-२	पृ० २६, ग्रं० सं० २३२ २३५, २४१ पृ० १०७ ए०, ११० ए० १११ ए०	
			१७वीं शती			

२. आचार्या-  
नुमानरहस्य  
३. पञ्चता-  
गदाधरी  
४. परामर्श  
गदाधरी\*

जगदीश\*  
१. श्रवच्छेद-  
कता विचार

मिथिला मैन०  
मैसूर मैन० १  
नासिक खं० २

प्रा० ह० लि० पो० का खो० वि०  
(वि० रा० भा० प० पट०) खं० ५  
डि० कैट० श्राँफ् सं० मै०  
इन् दि आ० ला० भाग २

५६

६५६०, ६७५७

पृ० ३७३ (२ प्र०),  
३८१ (४ प्र०)  
पृ० ३३३ = १२ प्रतियाँ

पृ० सं० १४, ग्रं० सं० ११३,  
११८, १२३, १२७ +

पृ० ११२ वी०, ११३ वी०—  
२ ग्रं०; वेन—१५०, १५५,  
१६६; कैट० ३, २३३,  
२३६, २५०, २५५—५८,  
२६१, २६६ (फ्रे०)  
एच्—जेड् ६६५

\*ग्रंथकार के अन्य—श्रवच्छेद-  
कतालिखण, श्रवच्छेदकतावाद,  
श्रवच्छेदकत्वनिवृत्ति रहस्य,  
श्रवच्छेदकानुगमकवाद—चार ग्रंथों  
की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। दे०  
न्यू कैट० कट० यू० श्राँफ् मद्रास  
१६४६, पृ० सं० ३०३ और मैसूर—  
पृ० ३८१।

†इस विवरण में ग्रंथकार के  
अन्य चार ग्रन्थ हैं।

\* ग्रंथकार के श्रवच्छेदकता-  
निवृत्ति नामक ग्रंथ की 'श्रवच्छे-  
दकतानिवृत्तिपत्र' नामक टीका  
की पाण्डुलिपि खोज में मिली है।  
दे० ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग श्राँफ्  
दि संस्कृत मैनिस्क्रिप्ट इन् दि  
गवर्नमेंट ओरियण्टल मैनिस्क्रिप्ट्स  
लाइब्रेरी, मद्रास।

ग्रंथ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
	लिपि-काल	ग्रन्थ प्रतिलिपि	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
२. सव्यमि- चार टीक			मिथिला, मेसूर १	पृ०-३८२	ग्रं० सं०-४२३६ ।
३. हेत्वाभास					
सामान्य- निरूपण			ओपर्ट-II	३५७६	
४. पञ्चता- विचार			पेजवार	३६	
५. व्याधि- करण-विचार			फेह	१३	
६. व्याप्ति- पञ्चक			प्रतिवादिभयङ्कर वी० एस्० के० राय एस्० एस्० पी० सी० १ ए	१०, ३६० ५३१ ३४०, ३६०, ३६७, ३८०, ३६१, ३६४,	

ग्रंथकार का 'अवच्छेदकता  
निरुक्तिश्रीडपत्र' नामक ग्रंथ भी  
खोज में मिला है ।



एस्० एस्० पी० सी० III के० वंगीय वेरेन्द्र एडिन० कामी० सेक्ट० सेट० सी० एच० जेट	४०२, ४२३, ४२८, ४३२, ४३५, ४३७, ४६७, ४७०, ४७२, ५००, ५१०, ५३२, ५५४, ५६६, ४५, १८४, पु० २४४ ८६१, ८६४, ११७६ सी० ६४, १६३२ १३८४	दे०--डि० कैंट० ऑफ स० सै० इन् दि अ० लाह० II पु० १२१ बी०, एस्० के० राय-- ११६, ६२०, ६२१, ६३५; वेरेन्द्र-- १३४, ८५७
प्रा० ह० लि० पो० का खो० वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	१३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, पु० १५३ पु० ३१ पु० ३३ पु० २०-२१ पु० १४ पु० १६	
सी० सी० पाट० १ " पाट० २ " पाट० ३ सी० एस्० सी० खं० ६ ए० सी० पाट० १ एच० पी० एस्० खं० १ (१६०५) बी० एम० (१६०८)		
	पु० २३	

अन्यकार	अन्य-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रमाण	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०
		१७०५शका०	सी० पी० वी० पी० देस खं० ६६	१२५ सं०—११६३७		
		१७६६शका०	डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि० खं० २	पृ० ३६-५१, ग्रं० सं०— ३६, ३६ ए#—एल् ( बारह प्रतियाँ )		
		१२५५फसली				
		१२२२फसली				
		१२१२फसली				
		१७८७शका०				
		५३२ लं० सं०				
			डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ५	पृ० सं० ३४४-३५५, ग्रं० सं० १०२१-१०४८ ( ५ तेलुगु, २ उडिया, १ मलयालम और १ बैंगला लिपि में लिखित )		

\* बिहार स्विच-सोसायटी की इसकी टीकाओं (बालबोधिनी—चैतन्य-दास, सारदीपिका—जगद्धर, गीतगोविन्द व्याख्या (गङ्गा)—कृष्णदत्त, शंकर मिश्र और नारायण भट्ट) की सात पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। चैतन्य-दासकृत बालबोधिनी टीका का उल्लेख अन्य खोज-विवरणों में भी हुआ है।—दे० सी० सी० पार्ट १, पृ० १५४, पार्ट २, पृ० १६७, पार्ट ३ पृ० ३३, वी० एम्० (१६०८) पृ० २५२।

प्रा० ह० लि० ग्रं० खो०  
वि०, खं० ५  
(वि० रा० भा० प०, पट०)

पृ० सं० १०, ११,  
ग्रं० सं० ८०, ८२, ८१

जगद्धर-कृत 'सारदीपिका' टीका  
(१६८१ वि०)—की अन्यत्रोप-  
लब्ध प्रतियाँ—सी० सी० पार्ट २,  
पृ० ३१, १६७, पार्ट ३, पृ० ३३  
१५३१ वि० में रचित कृष्णदत्त-  
कृत गंगा टीका की अन्यत्रो-  
पलब्ध प्रतियाँ। दे० सी० सी०  
पार्ट १, पृ० १५८, पार्ट २  
पृ० १६७, पार्ट ३ पृ० ३३।  
१७५८ शकान्द में लिखित  
श्री शंकरमिश्र कृत टीका की  
पाण्डुलिपियों की अन्य खोज-  
विवरणों में चर्चा हुई है। दे०  
सी० सी० पार्ट १, पृ० १५४,  
पार्ट २, पृ० ३१, १६७, पार्ट ३,  
पृ० ३३, सी० एस्० सी० खं०  
२, पृ० २०, बी० एम्० (१६९८)  
पृ० २५२। ४८६२ शकान्द  
(१७३७ वि०) में लिखित  
नारायणभट्ट-कृत टीका की  
पाण्डुलिपियों का अन्य खोज-  
विवरणों में उद्धरण :—डी-सी०



ग्रंथकार	ग्रंथ-नाम	प्राप्त ग्रंथों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रंथ-संख्या				विशेष
		रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो. वि. ग्रं.	ग्रं. सं.
	२. रामगीत (?)					पार्ट १ पृ० १५४, पार्ट २, पृ० ३१, १६८, पार्ट ३, पृ० ३३, सी० एम्० (१६८८) पृ० २५२। रामगीत के ग्रंथकार गीतगोविन्द-कार जयदेव से भिन्न कोई अन्य जयदेव है। विवरण में ग्रंथ-कार के रूप में जयदेव का उल्लेख हुआ है, किन्तु किसी अन्य खोज-विवरण में इस रचना की चर्चा नहीं है।
दण्डी	१. दशकुमार चरित			२	डि० कैट० माफ् सं० मै० इन् दि, आ० लाइ०, खं० ५ प्रा० सं० ह० लि० पो० वि०, खं० ५ (वि० २० मा० प०, पट०)	इनके रचित 'काव्यादर्श' की दो पाण्डुलिपियाँ जैन साहित्या-न्वेषकों को मिली हैं। दे०—क० प्रा० ता० प० ग्रं० सू०, पृ० सं०, १३६, (ग्रं० वं० ५५६)

वि० डि० क्र० कैट० मि०

गौ०, खं० ३

सी० सी० कट०

पट० ११

पट० ३

सी० पी० बी० पी०

सी० एस्० सी०

१७५३ वि०

प्रा० हस्त० लि० पो० का  
विवरण (खं० १)

१७६६ वि०

पाण्डुलिपियाँ- (हि० सा० स०,

प्र०; हि० सं० की ह० लि०

पु० का वि० प०)

१८७१ वि०

प्रा० सं० ह० लि० पो० का  
वि०, खं० ५  
(वि० रा० भा० प०, पट०)२६३, बी०, सी०, डी०  
आई पी० ४६२

पी० १०६, २१८

पी० ६६

३७८

(स० ६५) ६

सं० प्र० सं० १

पु० सं० २४६-२४८  
(ज्यो० प्र० सं० २२६-  
२४३ = १७ प्रतियाँ)पु० सं० २०, प्र० सं०  
१८२(प्र० सं० १३), ६१५ (प्र० सं०  
१४) २२५ (प्र० सं० १४०, प्र०  
सं० २)दे० सं० १७४, २६४ और  
१७६ की टिप्पणी ।

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ संख्या				विशेष
		लिपि-काल	लि. सं.	खोज-वि. सं.	ग्रं. सं.	
नागेशः	१. वैयाकरण-सिद्धान्त-मञ्जूषा	अठारहवीं शती	१.	प्रा० सं० ६० लि० पो० का खोज-वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प० पट०)	पृ० सं० २४, ग्रं० सं० २२३	नागेशभट्ट की दो रचनाएँ—'लघु-शब्देन्दुशेखर' और 'परिभाषेन्दु-शब्दशेखर'—हिन्दी-साहित्य-सम्भे-लन (प्रयाग) को खोज में मिली हैं। दे० 'पाण्डुलिपियाँ'—पृ० २०८, २१० (व्याकरण ग्रं० सं० १७, १८)
	२. परिभाषेन्दु-शेखर		२४.	डि० कैट० ऑफ् सं० सै० इन् दि आ० ला०, खं० ६	पृ० सं० १८२-१८७, ग्रं० सं० ५०२-५२४ (२३ प्रतियाँ)	
	३. लघु-शब्दरत्न			प्रा० सं० ६० लि० पो० का खोज-वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प० पट०)	पृ० सं० २५, ग्रं० सं० २३०	



४. परमलघु मञ्जूषा	४.	डि० कै० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ६  प्रा० सं० ह० पो० का खो० वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १६६, १६७ ग्रं० सं० ४६६—४७१ ( ३ प्रतियाँ )  पृ० सं० २७, ग्रं० सं० २४२
११ पतञ्जलि १. महाभाष्य	३३	पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्रयाग)	पृ० सं० २१० (क० स० ३३-३५, वे० सं० ६०७ (१४२५ ग्रं०), ६२२-१ (ग्रं० सं० १४०५-१), ६३६ (ग्रं० सं० १५१६ #
		डि० कै० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ६	पृ० सं० १४-१८ (ग्रं० सं० ४१-६८)†

\*हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग  
को खोज में ग्रंथकार की अन्य  
'योगानुशासन' रचना मिली है।  
दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० ४,  
क्र० सं० ३४, वे० सं० ८०७,  
ग्रं० सं० १०८६।

†तेलुगु लिपि-४; नागरी लिपि-  
५; मलयाला लिपि-१ और अन्य  
लिपियाँ-१७।

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त ग्रन्थ	खोज-काल	
भवभूति	१. मालती माधवर्ष	१८८५ वि०	१८८५ वि०	का० ना० प्र० सभा का खो० वि० (विन्ध्यशिखा- वर्ष ४, अंक ३)	पृ० सं० ११६, (ग्रं० सं० ३०६)*	॥पं० जमुनाप्रसाद नियनियाँ, रीवाँ (विन्ध्यप्रदेश) के पास सुरक्षित।
				प्रा० सं० ६० लि० पो० का० वि० (वि० रा० भा० प०, पट०) खं० ५	पृ० सं० २७ (ग्रं० सं० २४३, २४४)†	†वि० रा० भा० प० को खोज में ग्रंथकार का 'योगसूत्र' ग्रन्थ भी मिला है। दे० खो० वि०, खं० ५, सं० १५ (ग्रं० सं० १२८)
				सी० सी० पार्ट १ " पार्ट २ " पार्ट ३ सी० एस्सी० खं० ६ ट्री० कैट० खं० ३ एच्० पी० एस्० खं० १ (१६०५) बी० एम्० (१६०८) सी० पी० बी० पी०	पृ० सं० ४५३ पृ० सं० १०४ पृ० सं० ६८ पृ० सं० १६२ पृ० सं० २७७२  पृ० सं० ५६, ७४ पृ० सं० ६५ पृ० सं० ३७०	†श्रद्धार लाइब्रेरी के सग्रहा- लय में कवि के अन्य ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। दे० डि० कैट० ऑफ् सं० गै० इन् दि अ० लाइ० भाग ५।

१३	महोजि- दीक्षित	२. महावीर चरित	प्रसिद्ध	१६७० वि०	<p>६</p> <p>५८</p>	<p>हे० खं० १०१</p> <p>डि० कैट० ऑफ् मै० इन् मि० खं० २ (वि० रि० सो०, पट०)</p> <p>प्रा० सं० ६० लि० पो० का खो० वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)</p> <p>डि० कैट० आफ् सं० मै० इन् ६० अ० ला० खं० ६*</p> <p>प्रा० सं० ६० लि० पो० का वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)</p> <p>डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् ६० अ० ला० खं० ६</p>	<p>सं० १२५८६</p> <p>पृ० सं० ११ (ग्रं० सं० १०७, १०८)</p> <p>पृ० सं० १०, ग्रं० सं० ७७</p> <p>पृ० सं० ४६५-४६६ (ग्रं० सं० १४४८- १४५२=५ प्रतियाँ)</p> <p>पृ० सं० ११, ग्रं० सं० ६०</p> <p>पृ० सं० ६३-७७ (ग्रं० सं० १७८-२४१)*</p>	<p>#तेलुगु-लिपि—२ देवनागरी—३</p> <p>†तेलुगु-लिपि —१६ पाण्डुलिपियाँ मलयालय — ३ देवनागरी — ४ अन्य — ३६</p>
----	-------------------	-------------------	----------	----------	--------------------	--	--	--





२. शब्द-  
कौस्तुभ

प्रसिद्ध

२६

डि० कै० ऑफ़् सं० मै०  
इन् दि अ० ला० खं० ६,

पाण्डुलिपियाँ ( हि० सा०  
स०, प्रयाग )

पृ० सं० ३१—३५; अं०  
सं० ११२—१३२

पृ० सं०—२१२, क्र०  
सं० ५६—५७ ( वेष्टन एवं  
अं० सं० ८८६ ( १३४१ ),  
१०८१ ( १६७८ )

"	"	६६८ ( १६६२ )
"	"	१०४० ( १६३६ )
"	"	१०४७ ( १६४३ )
"	"	१०५६ ( १६५५ )
"	"	१४४० ( २४८५ )
"	"	१५६७ ( २६६६ )
"	"	१५६७ ( २६६८ )
"	"	१७३५ ( ३३३६ )
"	"	१८१० ( ३४१० )
"	"	१८२१ ( ३६६६ )
"	"	१६८० ( ३८७३ )
"	"	७७० ( ६४१ )

( १७०५ वि० में लिखित )

२० प्रतियाँ—तेलुगू-१०; देव-  
नागरी-३; अन्य-७ ।

ग्रंथकार	ग्रंथ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		रचना-काल	लिपि-काल	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				रा० जै० शा० ग्रं० सू० भाग २	पृ० सं० २६८ और ४१४ (ग्रं० सं० १६२४, वेष्टन-सं० १६८४)	
				प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि० खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २५, ग्रं० सं० २२६, २३३, २३६,	
३. प्रौढ मनोरमा	प्रसिद्ध		४३	डि० कैट० आफ् सं० मै० इन् द अ० लाइ० खं० ६	पृ० सं०-७८-८७; ग्रं० सं० २४३-२८० = ३७ प्र०*	*तेलुगु लिपि— ८ प्रतियाँ देवनागरी — १४ ; मलयाला — १ ; अन्य — १४ ; = ३७ प्र०
		१७०० वि०		पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्रयाग)	पृ० सं० २०६, क्र० सं० २२-२६ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० ६१७ (१४५३), ६३० (१५००), ६२६ (१४८६), ७०७ (७६३), १२१६ (१८११)	

भाबुदत्तमिश्र	१. रस- पारिजात	तेरहवीं शती	१६१० वि०	३५	प्रा० सं० ह० लि० पो० का वि०, खं० ५ (ब्र० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० २७, ग्रं० सं० २४५
२. रस- तरङ्गिणी					डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला० खं० ५	पृ० सं० ५६५-५७२, ग्रं० सं० १७८८-१८१६ (१७ प्रतियाँ)
३. रस- मंजरी	बारहवीं शती	१२७८ फसली	३७		रा० ला० मि०-से० मै०, खं० ८	सं० ३३७
					सी० सी० पार्ट १	पृ० ४६४
				" " २	" " २	" ११५
				" " ३	" " ३	" १०६
				आर० एम्० पार्ट ३	आर० एम्० पार्ट ३	" ३११
				" " ६	" " ६	" ११७
				सी० एस्० सी० खं० ७	सी० एस्० सी० खं० ७	" २३-२५
				डेस० खं० २२	डेस० खं० २२	सं० १२-२८
				ट्री० कै० खं० ३	ट्री० कै० खं० ३	पृ० ३१७१
				सी० सी० पार्ट १	सी० सी० पार्ट १	पृ० ४६५
				" पार्ट २	" पार्ट २	पृ० ११६, २२०,
				" पार्ट ३	" पार्ट ३	पृ० १०५, १०६

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थ ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		लिपि-काल	प्रामाण्य	खोज-स्थान	ग्रं. सं.	
				एच्. एस्. दी०, खं० १ (१६०५) सी० पी० बी० देस० ख० २२ रा० ला० मि०, खं० ५ डिस० कैट० ऑफ् मैने० इन मिथि० (वि० रि० सो०; प० (खं० २	पृ० ३२ पृ० ४०५ सं० १२६३५ पृ० २२६ पृ० सं० ४८-५६, ग्रं० सं० ३६, ए—जी, ३, ३८, ए—पी०, ३६, ४०, ४१, ए=२६ प्रतियाँ ।	
				प्रा० सं० ह० लि० प० का वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पृ० ८)	पृ० सं० ७, ग्रं० सं० ६७, ६८	
भारवि	१. किराला- जुनीयम्	प्रसिद्ध	३३६	सी० सी० पाट १ " " २ " " ३	पृ० १०७ " २१-१६४=१७४ प्र० " २३	



१४३८ शकाब्द	सी० एस्० सी० खं० ४ ए० सी० पाट १ एच्० पी० एस्० खं० १ (१६०५) बी० ए० (१६०८) सी० पी० बी० डेस० खं० २	पृ० १३ " ११० " १३ " ८७ " ८५ सं० ११६४—७६
१७२१ श० १७४१ "	डिस्० कैट० आर्फ् मै० इन् मि० खं० २ (बि० रि० सो०, पट०)	पृ० २३-२६, ग्रं० सं०- २३, ए-एफ्, २४, २५=६ प्रतियौ
४७६ ल० सं० १७४८ बि०	डिस्० कैट० आर्फ् सं० मैन० इन् दि आ० ला०, खं० ५ रा० जै० शा० भं० ग्रं० सू० भाग २	पृ० सं० ४—१५* ग्रं० सं० २६=२३ प्रतियौ पृ० सं० २४, २४४, ग्रं० सं० २२, १२०, क्र० सं० २५३, २५४, १३५४-५६ वेष्टन सं० २६१, २६, २६८, २६६, २७०।

\*देवनागरी-३; तेलुगु-१५;  
मलयाला-२; बंगला-१; अन्य-२।

ग्रंथ-नाम	ग्रंथ-संख्या				विशेष
	ग्रंथ-कार	लिपि-काल	लि० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
		१६५३ वि०	पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० सं०, प्रयाग)	पृ० सं० ३३२-३३३, व० सं० १-१८६	अष्टादश एव० ग्रं० सं०-१०४४ (१६४०), ७७७ (६६६), १५६१ (३०७५), ८५० (१२१३, १५८६ (३०५७), १२८ (१३५), ६२६ (६७५) ७०६ (७७४), ७५८ (८७६) १६१३ (३१३३) १६४१ (३२४७), १८११ (३४२५), १८४२ (३५४०), १८४३ (३५४१), १८४७ (३५५१), १८३७ (३७०७), १८४४ (४०६३), १८४२ (४०८८) । अन्तिम ग्रंथ आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी रचित 'किराताजु' नीय-भाषा' की पाण्डु-लिपि है ।
		१८६७ वि०			
		१८८० वि०			
		१८८४ वि०			
		१८९७ वि०			

१७७६ वि०	१६	सी० सी० पार्ट १ " " २ " " ३ आर० एम्० पार्ट ७ सी० पी० बी० पी० सी० एस् सी० ए डि० कैट० ऑफ् मै इन् मि० भाग २, (वि० रि० सो०, पट०)	पृ० ३७५* " ८४, २१३ " ८ " २११ ३०६ सं० ७८ पृ० सं० २५४, ग्रं० सं० २२२, ए०, ग्री०	* ग्रंथकार की 'बृहत्संहिता' रचना की पाण्डुलिपि विहार- रिसर्च-सोसाइटी को खोज में मिली है। दे० डि० कै० ऑफ् मै० इन् मि० भाग २, पृ० सं० २६६, ग्रं० सं० २२३।
१६४६ वि०	१८१३ वि० १८७६ वि०	पाण्डुलिपियाँ (दि० सा० स० प्र०,†)	पृ० सं० ४५८, क्र० सं० ५३ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० २०३१, ४३६७) पृ० सं० ६४, क्र० सं० ५४-५६ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० ८३६, ११७३, ७२३, (८०७), ८०१ (१०५४) पृ० सं० २७६, ग्रं० सं० १७१२, वेष्टन सं० १३७५	† हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग को खोज में ग्रंथकार की एक 'मंजोद्वार' रचना मिली है। दे० पाण्डुलिपियाँ, पृ० सं० ४५८, क्र० सं० ५४। ग्रंथकार-रचित यंत्र महोदधि-टोका भी उपलब्ध हुई है। १८३१ वि० में लिपि-कृत कश्चित् महीधर पंडित-रचित 'योगवासिष्ठ- विवरण' नामक रचना भी मिली है। दे० पाण्डुलिपियाँ, पृ० सं० २, क्र० सं० २६, वे० सं० ७७२, ग्रं० सं० ६५१।
१८५६ वि०		रा० जै० शा० मं० ग्रं० स० भाग २		

ग्रंथकार	ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			विशेष
		लिपि-काल	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१७ महेश ठाकुर (महामहोपाध्याय)†	१. तिथि-तत्त्वचिन्ता-मणि	१८८५ वि०	प्रा० सं० ६० लि० पो०	पृ० सं० १७, ग्रं० सं० १५०.	* संभवतः 'कात्यायनीय परिशिष्टम् शुल्बसूत्रभाष्यम्' के तथा वेदों के भाष्यकार 'महीधर' की एक रचना 'भक्तिलता' बिहार-रिसर्च-सोसायटी को खोज में मिली है। दे० डि० कैट० ऑफ् सैन० इन् मि० खं०, २ पृ० सं० १००, क्र० सं० ७६। दे० गायकवाड़ ओरियण्टल सीरीज, खं० xCVI, पृ० सं० १४, कैट० ऑफ् सैन०, खं० २, ग्रं० सं० ५५।
		१८९२ वि०	का वि० खं० ५ (वि० रा०	" २०, ग्रं० सं० १७६	
		१८९० वि०	भा० प०, पट०)	" २२, ग्रं० सं० १८६	
१७ महेश ठाकुर (महामहोपाध्याय)†	१. तिथि-तत्त्वचिन्ता-मणि	१७६६ श०	डि० कैट० ऑफ् में० इन्	पृ० सं० १५३-१५७	† इनके सम्बन्ध की सूचना के लिए दे० बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् (पटना) से प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य और बिहार' पृ० सं० ६५। ‡ बिहार-रिसर्च-सोसायटी, पटना
		१७८६ श०	मि०, खं० (वि० रि० सो०, पटना)	१४६ ग्रं० सं० ५० एम्, १५०†	



१४७८ शकानन्द में अक- वर द्वारा राज्य- प्रदान	१२८६ फ०	सी० सी० पार्ट ५ आर० एम्० पार्ट ५ प्रा० सं० ६० लि० पो० का वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० २३० पृ० २१७ पृ० सं० १६, प्र० सं० १६८
१६८६ श० १७१४ श० १६६१ श० १२५३ फ० १६६२ श० (?) १७७४ श० १६७७ श० १७२६ श० १६१४ श० १७०५ श० १६३८ श०	१६८६ श० १७१४ श० १६६१ श० १२५३ फ० १६६२ श० (?) १७७४ श० १६७७ श० १७२६ श० १६१४ श० १७०५ श० १६३८ श०	सी० सी० पार्ट १ " " २ " " ३ आर० एल्० खं० ५ डि० कैट० ऑफ्० मेन० इन् मि०, खं०, १ (वि० रि० सो०, पट०) पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० स०, प्र०)	पृ० ६५८ " १५७ " १३७ पृ० २५८ पृ० सं० ४३७-४४८, प्र० सं० ३८२, ए-जेड्, ए १ पृ० १८४, क्र० सं० ३१५, वे० सं० ८८८, प्र० सं० १३८५ एच् १।

को ग्रंथकार थी 'श्रुतीचार-निरणय'  
नामक ग्रंथ की पाण्डुलिपि प्राप्त  
हुई है। इनके रचनाकाल के  
सम्बन्ध में निम्न-लिखित पंक्तियाँ  
दृश्य हैं—

"वसु नग वेद वसुन्धरा शक में  
अकबर साह।

ठक्कुर सुबुधि महेश को कीन्हो  
मिथिला नाह।"

रुद्रधर उपाध्याय के अन्य तीन—  
वर्षकृत्य, व्रतपद्धति और आद्यविवेक  
—ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ बिहार  
रिसर्च सोसायटी को खोज में मिली  
हैं। दे० खा० वि० (वि० रि०  
सो०, पट०, खं० १) प्र० सं०  
३१०, ए—६; ३५६, ए—एस्;  
४०३, ए—डी। ग्रंथकार के  
सम्बन्ध में वि० रा० भा० प०,  
पट० से प्रकाशित 'हिन्दी-साहित्य  
और बिहार' की पृ० सं० ५४ भी  
दृश्य है। इस ग्रंथ के अनुसार

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		लिपि-काल	प्राप्त सं०	खोज वि०	ग्रं० सं०	
		१७८४ श० १६४६ श० १६६६ श० १८१६ श० १७१० श०	प्रा० सं० १८, १६, वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १८, १६, ग्रं० सं० १५३, १५६, १६२।	ग्रं० सं० १८, १६, ग्रं० सं० १५३, १५६, १६२।	ग्रंथकार की 'पुष्पमाला' की पाण्डुलिपि भी मिली है। ग्रंथ-कार ने हिन्दी (मैथिली) में भी रचना की है। हि० सा० सं०, प्र० को ग्रंथकार की 'श्यामापद्धति', 'आद्विनिर्याय' 'आद्वपद्धति', 'आद्वमाधव' और 'आद्व-विधि' की १८४६ वि०, १६०० वि०, १७७५ वि० और १६५५ वि०, १८०० वि० में लिखित पाण्डुलिपियाँ खोज में मिली हैं। दे० 'पाण्डुलिपियाँ' पृ० सं० १८५, १८३।
वररुचिः	१. प्राकृत-प्रकाश	प्रसिद्ध	११	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन दि० अ० ला०, खं० ६	पृ० सं० २८५-२८६, ग्रं० सं० ७२२-७३० (८ प्र०)	* १-ग्रंथकार की 'षोढासमाप्त' रचना भी खोज में मिली है। दे० रा० जै० शा० भं० ग्रं० सं०

१८४३ वि०

रा० जै० शा० भं० ग्रं०  
सं०, भाग २

पृ० सं० २५६, क्र०  
सं० १५१७-१५१८,  
वेष्टन सं० १२२६, १२२७  
पृ० सं० २५, ग्रं० सं०  
२२५

१७६६ वि०

प्रा० सं० ह० लि० पो०  
का खो० वि०, खं० ५  
(वि० रा० भा० प०, पट०)

भाग २, पृ० सं० २८, क्र० सं०  
२६५, वेष्टन सं० २०६। २-  
'कन्नड़प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ-  
सूची' के अनुसार मूडविट्टी जैनमठ  
में ग्रंथकार का तालपत्र पर कन्नड़  
लिपि में 'प्राकृतमञ्जरी' नामक तथा  
आयुर्वेद-विषयक 'योगशतक'  
नामक दो रचनाएँ मिली हैं। दे०  
क्रमशः पृ० सं० १०६, २०७, क्र०  
सं० ६२ (ग्रं० सं०-५२३); ७  
(ग्रं० सं० २८)। ३-अड्यार  
लाइब्रेरी के संग्रहालय में 'प्रयोग-  
संग्रह' और 'समासपटल' की पाण्डु-  
लिपियाँ भी प्राप्त हुई हैं। दे०—  
डि० कैट० ऑफ् सं० मेन० इन्  
दि' अ० ला०, पृ० सं० १६४ और  
२४३। ४-विहार-सिक्च-सांसायटी  
को खोज में 'भार्गवमुहूर्त्त' नामक  
रचना की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है।  
इस पाण्डुलिपि को ग्रंथकार  
७ दिवस में रचा था, ऐसा  
उल्लेख हुआ है। दे०-डि०

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		रचना-काल	लिपि-काल	प्राप्त प्रतियाँ	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०
						कैट० ऑफ् मै० इन् मि० (वि० रि० सो०, पट०) खं० ३, पृ० सं० २६६, ग्रं० सं० २२७। ५-यह रचना सी० सी० पार्स १ पृ० ४७, पार्स २, पृ० सं० ६३ में भी उल्लिखित हुई है। बड़ौदा सेंट्रल लाइब्रेरी के संग्रहालय में ग्रंथ-कार की 'कुल्लसूत्र' नामक रचना की पाण्डुलिपि सुरक्षित है। दे० कैट० ऑफ् मै० इन् दि सी० पल० बी०, खं० १, पृ० सं० ३१, क्र० सं० ७४, ए० सं० ६३८४ (ए) ग्रं० सं० ५००।
शङ्कराचार्य	१. सोन्दर्य-लहरी	नवीं शती	१८४६ वि० १८४७ वि० १६१२ वि०	१३	पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० सं०, प्र०)	- पृ० सं० ३७६-३८०, क्र० सं० १६०-१७१ (१२ प्र०), वे० सं०



१६५५ वि०

१८५७ वि०

२. वाक्य  
सुधा

”

३. आत्म-  
नोध

”

२८

६४

१२१, ३१६, ११६८,  
११६६, ८३५, १४५२,  
३. ३३८, ७१३, ८५६,  
१४५२, ६२१; ग्रं० सं०-  
१२८, ३४४, १७६७,  
४२५६, ११७०, २५४५,  
४, ३६६, ७८२, १२-  
२८, २५४४, ३१८१।

पृ० सं० ६, ग्रं० सं० ७४

प्रा० सं० ६० लि० पो०  
का वि० ख० ५ (वि० रा०  
भा० प०, पट०)

पृ० सं० ४०७-४१४,  
ग्रं० सं० ११०७-११३४  
= २७ प्रतियाँ

डि० कैट० ऑफ् सं० मै०  
इन् दि अ० ला०, ख० ७

†तेलुगु-७, नागरी-३; अन्य-१७  
= २७।

पृ० सं० ११, ग्रं० सं० ६३

प्रा० सं० ६० लि० पो०  
का वि०, ख० ५ (वि०  
रा० भा० प०, पट०)

पृ० सं० २५६-२६६,  
ग्रं० सं० ६७६-७३७ =  
६१ प्रतियाँ

†तेलुगु-२२; नागरी-३; कन्नड-  
२, अन्य-३४ = ६१।

ग्रन्थ-कार	ग्रन्थ-नाम	‘प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		लिपि-काल	हि.सं. क्र. सं.	खोज. वि. ग्रं.	ग्रं. सं.	
				पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० सं०, प्र०)	पृ० सं० १०, क्र० सं० १२, १३ वेष्टन-सं० १४०५, १७४७, ग्रं० सं० २३१६, ३३५२।	
		१६५८ वि०		प्रा० सं० ६० लि० पो० का वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० ११, ग्रं० सं० ६४	
	४. वेदान्त-संज्ञा प्रक्रिया-		१	प्रा० सं० ६० लि० पो० का वि०, खं० ५ (वि० रा० भा० प०, पट०)	पृ० सं० १२, ग्रं० सं० ६५	
	५. शारीरक-मीमांसा-भाष्य	१६२५ वि०	५	डि० कैट० ऑफ् सं० मै० इन् दि अ० ला०, खं० ७	पृ० सं० ५७, ग्रं० सं० १४८	
				पाण्डुलिपियाँ (हि० सा० सं०, प्र०)*	पृ० सं० ५, क्र० सं० ४१-४३, वे० सं० १४६१, ११४६, ८८५,	* हि० सा० सं०, प्र० को ग्रंथ-कार की अन्य— १. ‘अद्वैत दीपिका’, ‘अपरो-

ग्रा० सं० ६० लि० पो० का  
खो० वि०, खं० ५ (बि०  
रा० भा० प०, पट०)

ग्रं० सं० २७०४, १७४७,  
१३४०

पृ० सं० १४, ग्रं० सं०  
१२२

ज्ञानभूति, 'तत्त्वबोध', 'तत्त्व-  
विवेक', 'वज्रसूचीपंचम', 'ब्रह्म-  
लिङ्गाला', 'वेदांततत्त्वसार',  
'वेदान्तसिद्धान्त', 'आत्मपूजा',  
'ज्ञानप्रबोधमंजरी', 'ज्ञानबोध',  
'द्वादशमहावाक्य', 'वाक्य-  
सुप्रकरण', 'विवेकचूडामणि',  
'विष्णुसहस्रनामभाष्य', 'गणेश-  
सूक्त', 'परमहंसउपनिषद्', 'वज्र-  
सूचिकोपनिषद्', 'भगवद्गीता-  
भाष्य', 'अपराधसुन्दरीस्तोत्र',  
'कृष्णस्तोत्र', 'गंगास्तोत्र', 'गणेश-  
स्तोत्र', 'जगन्नाथस्तोत्र', 'दक्षिणा-  
मूर्तिस्तोत्र', 'देव्यपराधस्तोत्र',  
'नवरत्नमालास्तोत्र', 'पञ्चदशी-  
स्तोत्र', 'भवानीस्तोत्र', 'विष्णु-  
सहस्रनामस्तोत्र', 'मानसिस्तोत्र',  
'वचनफलस्तोत्र', 'शिवशत्या-  
त्मकस्तोत्र', 'शिवस्तोत्र', 'सप्तशती-  
स्तोत्र', 'सरस्वतीस्तोत्र', 'सूर्य-  
स्तोत्र', 'हरिनाममालास्तोत्र',  
'देवीमानसीपूजा', 'मानसी-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचना-काल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				विशेष
		लिपि-काल	खोज-वि० ग्रं०	ग्रं० सं०		
हलायुधः	१. ब्राह्मण-सर्वस्व	सातवीं शती	सी० सी० पाटं १ " पाटं २ " पाटं ३ एस० सी० पी०	पृ० ३८६ " ८८ " ८४ १६०, १६१	पूजा, 'भेषमाला', 'आनन्द-लहरि', 'गोविन्दाष्टक', 'गङ्गाष्टक', 'जन्माष्टक', 'त्रिपुरसुन्दर्यष्टक', 'नामावलीस्तुति', 'बालाष्टक', 'भैरवाष्टक', 'रामाष्टक', 'शिवाष्टक', 'हरिनाममाला'—५२ ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ खोज में मिली हैं।	
					* बिहार-रिसर्च-सोसायटी को खोज में ग्रंथकार के 'शृङ्गार-भाष्यम्' और 'प्रायश्चित्तसर्वस्वम्' की पाण्डुलिपि भी प्राप्त हुई है। दे० डि० कै० ग्रॉफ् मै० इन् मि०, खं० ४ ( बि० रि० सो०, पट० )	



१७७३ श०	डि० कैट० ऑफ् मै० हन्	पृ० सं० १६६-१६८,	पृ० सं० ७७, ग्रं० सं० ५७।
१६४१ वि०	मि०, खं० ४ (वि० रि०	ग्रं० सं० ११५, ए० सी०	'हलायुधकोश' नामक रचना भी
१६२७ श०	सो०, पट०)	४ ग्रं०	खोज में मिली है। दे० प्रा० सं०
	" खं० १	पृ० सं० ३२७-३२८,	ह० पो० का वि०, खं० ७५
		ग्रं० सं० २८६, ए,	(वि० रा० भा० प०, पट०) पृ०
		२८७	सं० २७, ग्रं० सं० २५१ की
			टिप्पणी।
१७३६ वि०	आर० एम्० पाट० २	पृ० सं० ७८	
	एन्० एस्० खं० २	पृ० सं० ८४ (१६१५)	
	सी० सी० पाट० १	पृ० सं० १६१, ३३७	
	प्रा० सं० ह० लि० पो०	पृ० १७, ग्रं० सं० १४८	
	का खो० वि०, खं० ५ (वि०		
	रा० भा० प०, पट०) —		
१६२३ श०	डि० कैट० ऑफ् मै० हन्	पृ० सं० ६, ७, ग्रं०	
	मि०, खं० २	सं० ७, ए०	
	(वि० रि० सो०, पट०)		
१६२२ वि०	पाण्डुलिपियाँ (हि० सा०	पृ० सं० ३०१, क०	
	स०, प्र०)	सं० १४, वे० सं० १७८,	
		ग्रं० सं० ३०३१	
	प्रा० सं० ह० लि० पो०	पृ० सं० २७, ग्रं० सं०	
	का खो० वि०, खं० ५ (वि०	२५१	
	रा० भा० प०, पट०)		













मूल्य : 45/- रूपये मात्र